RNI No. :BIHHIN/2013/53084

संपादक
अभिजीत कुमार, 9431006107
समाचार संपादक
अखिलेश कुमार, 9431089053
राजनीतिक संपादक
प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337
संपादकीय सलाहकार
राजीव कुमार सिंह 9431210181
कॉन्सेप्ट एडिटर
अनूप कुमार शर्मा, 7004821433
प्रबंधक
अविनाश कुमार 8287266244
विधि सलाहकार
वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट
बिहार ब्यूरो
अनूप नारायण सिंह 9546224277
क्राइम ब्यूरो
एसएन श्याम
मुख्य संवाददाता
सोनू सिन्हा,9431006189
आशीष कुमार
जिला ब्यूरो
बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316
भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार,
(ब्यूरो चीफ), 9334194515, 7677093032
समस्तीपुर : राजेश कुमार
चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993
कटोरिया : दीपक चौधरी, विशेष संवाददाता
9973077043
सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)
सहरसा : आशीष झा
बिहार-झारखंड : अभिनव कुमार 7903292877
दिल्ली : एश्वर्या सिंह, स्वाति
ग्रेटर नोएडा : गौरीशंकर, 8920215318
प्रधान कार्यालय
गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)
मो.- 9431006107
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार
गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोठी लंगर टोली, डीएन दास लेन, पटना-800 004,से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निबटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक

डॉ. संजय मयूख
राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी
भाजपा

जय जयराम सिंह
JJRS CONSTRUCTION
PVT. LTD.

चर्चित बिहार

वर्ष : 12, अंक : 01, जनवरी 2026, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

06 अभ्युदय 2025 : 75 के उम्र में दिखाया 60 वाला जलवा

डॉ. संजय मयूख : सत्ता के शिखर ... 10

बेगूसराय में लाल झंडा ... 16

लेट्स इंस्पायर बिहार : बदलाव का ... 13

बांका में होगा फिल्म सिटी ... 32

एक बेतुका आदेश

हाल के दिनों में देश की शीर्ष अदालत से लेकर आम विमर्श तक में आवारा कुत्तों का मामला सुर्खियों में रहा है। इस संवेदनशील, जटिल व विवादास्पद मुद्दे से जुड़े कई तरह के अंतर्विरोध सामने आ रहे हैं। लेकिन इस कड़ी में बिहार के एक नगर निगम के बेतुके फरमान को लेकर आलोचना की जा रही है। यह निर्णय न केवल बेतुका है बल्कि हास्यास्पद भी है। बिहार के सासाराम के नगर निगम ने शिक्षकों से सड़कों में घूमने वाले आवारा कुत्तों की गिनती करने को कहा है। दरअसल, अदालत के निर्देशों के अनुरूप स्थानीय निकायों की इस बाबत जवाबदेही तय की गई है। सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता पर उठ रहे सवालों व गिरते परीक्षा परिणाम के बावजूद शिक्षकों को गैर-शिक्षण कार्यों में लगाना दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जाएगा। वहीं दूसरी ओर हर छोटे-बड़े सरकारी अभियान में शिक्षकों की जिम्मेदारी लगाना प्रशासनिक विफलता को भी उजागर करता है। कभी जनगणना, कभी चुनावी ड्यूटी तो कभी आपदा सर्वेक्षण, और अब कुत्तों की गिनती का बेतुका काम शिक्षकों के जिम्मे लगा दिया गया है। दरअसल, बिहार के शिक्षक विषम परिस्थितियों के चलते पहले ही अत्यधिक दबाव में हैं। जिसके कारण वे शैक्षणिक जिम्मेदारियों व गैर-शिक्षण दायित्वों के लगातार बढ़ते बोझ के बीच संतुलन बनाने के लिये संघर्ष कर रहे हैं। इसमें दो राय नहीं है कि हर इस तरह का व्यवधान कक्षा के समय, पाठ योजना और छात्रों की सहभागिता को गहरे तक प्रभावित करता है। निश्चित रूप से प्राथमिक शिक्षा बच्चे के विकास की नींव रखती है। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि बिहार के स्कूलों का परीक्षा परिणाम बेहद निराशाजनक रहता है। वर्षों से पेश की जा रही एएसईआर रिपोर्टों में कई बार उजागर किया गया है कि बिहार के स्कूलों का परीक्षा परिणाम देश में सबसे कमजोर रहा है। जो कि एक चिंता का विषय बना हुआ है। ऐसे में जब पहले ही बिहार के स्कूलों का परीक्षा परिणाम निराशाजनक रहता है तो शिक्षकों को एक और गैर-शैक्षणिक कार्य के लिये कक्षाओं से बाहर निकालना, निस्संदेह शिक्षा व्यवस्था के लिए आत्मघाती कदम ही कहा जाएगा। इससे भी बुरी बात यह है कि यह आदेश कई वास्तविक खतरों से भरा है। आवारा कुत्तों की गिनती करना शिक्षण के कागजी कार्य के समान सहज नहीं है। निश्चित रूप से अनेक शिक्षक ऐसे होंगे जो कुत्तों से डरते भी होंगे। खासकर शिक्षिकाओं के लिये यह कार्य खासा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। कुछ लोग इस गणना प्रक्रिया में वास्तविक खतरे का सामना भी कर सकते हैं। इस बात का संकेत शीर्ष अदालत की टिप्पणी में भी मिलता है। दरअसल, सर्वोच्च न्यायालय ने इस बात पर जोर दिया था कि किसी कुत्ते के मन को पढ़ना या यह अनुमान लगाना असंभव है कि कोई जानवर कब आक्रामक हो जाएगा। निश्चित रूप से अप्रशिक्षित शिक्षकों को ऐसे कार्य करने के लिए कहना, उनकी सुरक्षा के लिये भी चुनौती होगी। खासकर तब जब आवारा कुत्तों के काटने की घटनाएं और रेबीज से होने वाली जीवन क्षति सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिये चिंता का विषय बनी हुई हैं। ऐसे में नगर निगम के आदेश की तार्किकता पर सवाल उठना स्वाभाविक है। दरअसल, सर्वोच्च न्यायालय ने पशु जन्म नियंत्रण और जन सुरक्षा उपायों को लागू करने में नगरपालिकाओं की विफलता पर सवाल उठाए थे। जिसके बाद एक स्थानीय निकाय ने अपनी मूल जिम्मेदारी शिक्षकों पर थोपकर इसका जवाब दिया है। निश्चित रूप से यह अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ने जैसा है। निर्विवाद रूप से इस बेतुके आदेश को तत्काल प्रभाव से रद्द करने की जरूरत है। सही मायनों में नगरपालिका के अधिकारियों को अपना काम करना चाहिए और शिक्षकों को भी अपना काम करने की आजादी दी जानी चाहिए। यह समस्या केवल शिक्षकों की ही नहीं है बल्कि यह हमारे नौनिहालों के भविष्य से खिलवाड़ करने जैसा है। ऐसे में शिक्षकों को शिक्षण कार्य के अलावा अन्यत्र काम सौंपना, कहीं न कहीं छात्रों और छात्राओं को शिक्षा पाने के अधिकार से वंचित करने जैसा भी है।

अभिजीत कुमार
संपादक
9431006107
cbhindi.news@gmail.com

बिहार से दिल्ली तक: नितिन नवीन का सधा हुआ सियासी सफर

अनूप नारायण सिंह

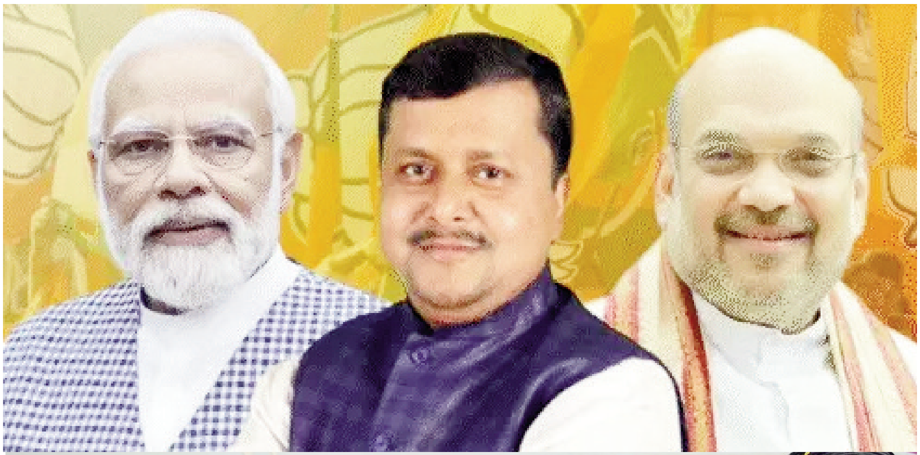

भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय राजनीति में बिहार ने एक बार फिर अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई है। नितिन नवीन को भाजपा का राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बनाया जाना सिर्फ एक संगठनात्मक फैसला नहीं है, बल्कि यह उस सधे हुए, धैर्यवान और जमीन से जुड़े नेतृत्व की पहचान है, जो शोर में नहीं, काम में विश्वास करता है।

नितिन नवीन कोई अचानक उभरा हुआ नाम नहीं हैं। वे स्वर्गीय नवीन किशोर प्रसाद सिन्हा की राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ाते हुए पांचवीं बार पटना के बांकीपुर से विधायक बने हैं। यह अपने आप में बताता है कि जनता के बीच उनकी स्वीकार्यता कितनी गहरी और स्थायी है। लगातार दूसरी बार उन्हें बिहार सरकार में पथ निर्माण विभाग जैसा महत्वपूर्ण मंत्रालय सौंपा गया था, जो उनके प्रशासनिक कौशल और संगठन के भरोसे—दोनों का प्रमाण है।

बिहार की राजनीति में नितिन नवीन को एक बड़े कायस्थ चेहरे के रूप में देखा जाता है, लेकिन उनकी पहचान सिर्फ जातीय समीकरणों तक सीमित नहीं रही। वे उन नेताओं में रहे हैं, जो हमेशा लो प्रोफाइल में काम करते हैं—न ज्यादा बयानबाजी, न अनावश्यक विवाद, न ही सुर्खियों में बने रहने की बेचैनी। शायद यही वजह है कि वे पार्टी के भीतर भी सबको स्वीकार्य और भरोसेमंद रहे हैं। संगठन के कामकाज में उनकी असली परीक्षा तब हुई, जब उन्हें छत्तीसगढ़ में संगठनात्मक जिम्मेदारी दी गई। वहां उन्होंने जिस तरह से पार्टी के ढांचे को मजबूत करने में भूमिका निभाई, उसने उन्हें राष्ट्रीय नेतृत्व की नजरों में ला खड़ा किया। न कोई प्रचार, न कोई लॉबिंग—बस काम और उसका नतीजा। और फिर, बिना किसी शोर-शराबे के, उन्हें भाजपा का राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बना दिया गया।

यह पद नितिन नवीन के लिए सिर्फ एक नई जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह उस भरोसे की मुहर है, जो पार्टी का शीर्ष नेतृत्व उन पर करता है। बिहार की राजनीति से निकलकर भाजपा की राष्ट्रीय राजनीति के शीर्ष पायदानों तक पहुंचना आसान नहीं होता। इसके लिए धैर्य, निरंतरता और संगठन के प्रति निष्ठा—तीनों चाहिए।

नितिन नवीन का सफर इन तीनों का उदाहरण है। दिलचस्प यह भी है कि आज भाजपा के राष्ट्रीय मंच पर बिहार की आवाज और मजबूत हुई है। नितिन नवीन के साथ-साथ डॉ. संजय प्रकाश मयूख, जो विधान परिषद के सदस्य हैं और पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता की भूमिका में हैं, पहले से ही राष्ट्रीय स्तर पर बिहार का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। यह संकेत है कि पार्टी के भीतर बिहार को सिर्फ एक चुनावी प्रदेश के रूप में नहीं, बल्कि नेतृत्व देने वाले राज्य के रूप में भी देखा जा रहा है।

नितिन नवीन की खासियत यह रही है कि उन्होंने अपने पिता की विरासत को बोझ नहीं, बल्कि जिम्मेदारी की तरह उठाया। पांच बार विधायक बनना, एक अहम

मंत्रालय संभालना और अब राष्ट्रीय स्तर पर इतनी बड़ी जिम्मेदारी मिलना—यह सब किसी तात्कालिक राजनीतिक लहर का नतीजा नहीं, बल्कि लगातार, चुपचाप और भरोसेमंद काम का परिणाम है।

आज जब राजनीति में शोर, प्रचार और तात्कालिक लोकप्रियता का दौर है, नितिन नवीन का उभार यह बताता है कि संगठन अब भी काम करने वाले, टिकाऊ और भरोसेमंद नेताओं को पहचानता है। बिहार से निकलकर दिल्ली की सत्ता और संगठन की धुरी में जगह बनाना—नितिन नवीन का यह सफर सिर्फ उनका नहीं, बल्कि बिहार की राजनीतिक क्षमता का भी प्रमाण है। आने वाले दिनों में यह देखना दिलचस्प होगा कि यह शांत, संयमित और कर्मठ नेता राष्ट्रीय राजनीति में भाजपा की संगठनात्मक दिशा को किस तरह आकार देता है। लेकिन इतना तय है कि नितिन नवीन का नाम अब सिर्फ बिहार की राजनीति तक सीमित नहीं रहा—वे भाजपा के राष्ट्रीय नेतृत्व के स्थायी चेहरों में शामिल हो चुके हैं।

बिहार के 'नितिन' को मिला भाजपा का 'नवीन' ताज

राजकिशोर सिंह

विश्व की सबसे बडे राजनीतिक दल के रुप में स्थापित भारतीय जनता पार्टी ने सभी को चौंकाते हुए पार्टी की कमान 45 साल के युवा क्षत्रप और बिहार के लाल नितिन नवीन के हाथों सौंप दी. नीतीश कुमार की अगुवाई वाली सरकार में तीन बार मंत्री और पांच बार के विधायक नितिन नवीन ताकाल प्रभाव से कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष की कमान थाम लिए हैं. भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद का औपचारिक चुनाव होने पर जेपी नड्डा का जगह लेंगे. यह महज संयोग भर नहीं है कि राजधानी पटना के बांकीपुर विधान सभा क्षेत्र से पांच बार चुने गए विधायक नितिन नवीन 14 दिसंबर को जब अपने क्षेत्र में जीत के बाद कार्यकताओं को बड़ी ही आत्मविश्वास और संतोष के साथ सम्मानित कर रहे थे उसी वक्त भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव अरण सिंह के हस्ताक्षर से उन्हें पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त करने का पत्र जारी किया गया था.

यह अद्भुत संवेग ही है कि जिस पार्टी का गठन 1980 में हुआ उसके राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष पद पर नितिन नवीन तैनात किए गए. नितिन नवीन का जन्म भी उसी साल हुआ है. यह महज संयोग नहीं कि नितिन नवीन ने कभी राजनीति को अपना लक्ष्य नहीं बनाया, लेकिन पिता नवीन किशोर प्रसाद सिन्हा के निधन के बाद हुए उपचुनाव में 2006 में उन्हें विधायक चुना गया और उसके बाद लगातार जीतकर विधायक बने. आज की तारीख में पार्टी के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान हैं. इनके चयन को राजनीतिक हलकों में बंगाल चुनाव की पारी से भी जोड़ कर देखा जा रहा है.

उक्त पद पर नियुक्ति भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व में उनके बढ़ते कद और संगठनात्मक क्षमताओं में विश्वास को दर्शाती है. बिहार में पथ निर्माण और नगर विकास एवं आवास मंत्री के रूप में कार्य करते हुए नितिन नवीन को राष्ट्रीय स्तर पर यह नई जिम्मेदारी दी गई है. यह संगठनात्मक फेरबदल ऐसे महत्वपूर्ण समय में हुआ है जब पार्टी अपने शीर्ष नेतृत्व ढांचे में बदलाव के दौर से गुजर रही है. भाजपा के मौजूदा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, जिनका मूल कार्यकाल पूरा हो चुका है, उन्हें 2024 के लोकसभा चुनावों जैसे महत्वपूर्ण राजनीतिक पड़ावों पर पार्टी का नेतृत्व करने के लिए कार्यकाल विस्तार दिया गया था. ऐसे में, नितिन नवीन को राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बनाना पार्टी की आगामी संगठनात्मक रणनीति का एक अहम हिस्सा माना जा रहा है.

ध्यान रहे कि नितिन नवीन के पिता नवीन किशोर प्रसाद सिन्हा भाजपा के मजबूत नेता थे. उनके निधन के बाद जब उपचुनाव हुआ, तब जनता ने उसी परिवार के बेटे पर भरोसा जताया. यही वह क्षण था जहां नितिन नवीन की राजनीतिक यात्रा शुरू हुई थी. उसके बाद जो हुआ, वह बिहार की राजनीति का एक चमकता हुआ अध्याय बन गया. बांकीपुर सीट से वह लगातार पांच बार से लगातार जीतते आ रहे हैं, जो उनकी लोकप्रियता और क्षेत्र पर मजबूत पकड़ को दर्शाती है. पथ निर्माण मंत्री के रूप में उनकी पहचान एक युवा, ऊजार्वान और काम करने वाले नेता की बनी है. लेकिन यह भी उतना ही सच है कि राजनीति के इस लंबे सफर में उनका पहला कदम विरासत की ताकत से उठाया गया था, जहां पिता की पहचान ने बेटे को राजनीति की भीड़ में अलग खड़ा कर दिया. नितिन नवीन युवा ऊर्जा, आधुनिक सोच और सक्रिय नेतृत्व का उदाहरण हैं. उनको इस बात का श्रेय भी दिया जाता है कि उन्होंने अपने क्षेत्र को शहरी विकास की नई धाराओं से जोड़ने का प्रयास किया है चाहे सड़कें हों, बिजली, जलापूर्ति या ट्रैफिक व्यवस्था, हर मुद्दे पर उन्होंने सतत निगरानी रखी है.

हाल के बिहार विधानसभा चुनावों में उन्होंने बांकीपुर से अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी को 51,000 से अधिक वोटों के बड़े अंतर से हराकर शानदार जीत दर्ज की थी.

नितिन नवीन ने 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव में राजद प्रत्याशी रेखा कुमारी को 51,936 मतों से पराजित किया है. पहली बार 2006 में उपचुनाव लड़ा और जीत दर्ज की थी. इसके बाद 2010, 2015 और 2020 के बाद अब 2025 में भी जीत का परचम लहराया है. पहली बार 9 फरवरी 2021 को नीतीश सरकार के मंत्रिमंडल विस्तार में उन्हें पथ निर्माण मंत्री बनने का मौका मिला था. नितिन नवीन कायस्थ जाति से आते हैं. वह 26 साल की उम्र में विधायक बन गए थे और 45 साल की उम्र में भाजपा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बन गए.

माना जा रहा है नितिन नवीन भाजपा के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष हो सकते हैं. कुछ ऐसा ही जेपी नड्डा के समय हुआ था. पहले उन्हें कार्यकारी अध्यक्ष बनाया गया था और उसके बाद उन्हें ही राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया था. नितिन नवीन छत्तीसगढ राज्य के प्रभारी भी हैं. उस दौरान हुए चुनाव में भाजपा को प्रचंड जीत दिलाई थी. सिक्किम के भी प्रभारी रहे हैं. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नितिन नवीन को नए राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बनने पर बधाई दी.

पीएम मोदी ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, ॥नितिन नवीन जी ने एक कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में अपनी पहचान बनाई है. वे एक युवा और कर्मठ नेता हैं, जिन्हें संगठनात्मक अनुभव का भरपूर लाभ है और बिहार में विधायक और मंत्री के रूप में उनका कार्यकाल प्रभावशाली रहा है. उन्होंने जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए अथक परिश्रम किया है. वे अपने विनम्र स्वभाव और व्यावहारिक कार्यशैली के लिए जाने जाते हैं. मुझे विश्वास है कि उनकी ऊर्जा और समर्पण आने वाले समय में हमारी पार्टी को मजबूती प्रदान करेंगे. भाजपा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बनने पर उन्हें हार्दिक बधाई. इधर, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने एक्स पर नितिन नवीन को बधाई देते हुए लिखा, ॥बिहार की धरती से आने वाले युवा और ऊजार्वान नेता नितिन नवीन को भाजपा का कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किए जाने पर हार्दिक बधाई. वे एक कर्मठ कार्यकर्ता और कल्पना क्षमता के धनी व्यक्ति हैं. प्रधानमंत्री मोदी के प्रेरक नेतृत्व में वे भाजपा को सफलता की नई बुलंदियों तक ले जाने में अवश्य सफल होंगे. उनके कार्यकाल की सफलता के लिए उन्हें बहुत शुभकामनाएं.

भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नवीन कायस्थ जाति से आते हैं. इनकी जनसंख्या यूपी-बिहार ही नहीं पूरे देश में कहीं भी इतनी नहीं है कि वो राजनीति को

प्रभावित कर सकते हों. पर बंगाल में आजादी के बाद 37 साल तक कायस्थों के हाथ में सत्ता रही है. भारतीय जनता पार्टी ने ऐसा फैसला लिया, जिसने राजनीतिक गलियारों में हलचल मचा दी है. मात्र 45 वर्ष की आयु में यह नियुक्ति भाजपा के इतिहास में सबसे युवा राष्ट्रीय नेता के रूप में दर्ज हो गई है. नितिन नवीन, जो बिहार के बांकीपुर विधानसभा क्षेत्र से विधायक हैं, अब जेपी नड्डा के बाद पार्टी के संगठनात्मक चेहरे के रूप में उभर रहे हैं. सोशल मीडिया पर यह कहा जा रहा है कि नितिन नवीन के बहाने भाजपा बंगाल विधान सभा चुनावों में बढ़त बनाना चाहती है. लेकिन सवाल यह उठता है कि बिहार के इस नेता का पश्चिम बंगाल के आगामी विधानसभा चुनावों से क्या लेना-देना है? और क्या यह नियुक्ति भाजपा की उस रणनीति का हिस्सा है, जिसमें बंगाली 'भद्रलोक' को प्रभावित करने का प्रयास किया जा रहा है? पश्चिम बंगाल के 2026 के विधान सभा चुनावों में भाजपा की नजरें टीएमसी की ममता बनर्जी पर टिकी हुई है.

साल 2021 के चुनावों में भाजपा ने 77 सीटें जीतकर अपनी ताकत दिखाई थी, लेकिन अब लक्ष्य 200 से अधिक सीटें हासिल करना है. बंगाल की राजनीति में जाति, संस्कृति और बौद्धिक वर्ग (भद्रलोक) की भूमिका हमेशा से महत्वपूर्ण रही है. नितिन नवीन की नियुक्ति को विशेषज्ञ एक 'मास्टरस्ट्रोक' बता रहे हैं, क्योंकि उनकी कायस्थ जाति बंगाल के भद्रलोक से सीधे जुड़ती है. क्या नवीन की नियुक्ति बंगाली भद्रलोक को इम्प्रेस करने में सफल होगी? नितिन का बंगाल से कनेक्शन उनकी जाति और छवि से जुड़ा है. कायस्थ होने के नाते वे बंगाल के उस वर्ग से जुड़ते हैं, जो सदियों से राज्य की सत्ता और संस्कृति को आकार देता आया है. बिहार और बंगाल के बीच सांस्कृतिक समानताएं हैं. दोनों में कायस्थ, ब्राह्मण और वैद्य समुदायों का प्रभाव है. विशेषज्ञों का मानना है कि यह फैसला नरेन्द्र मोदी और अमित शाह की रणनीति का हिस्सा है, जो बंगाल को 'अगला बड़ा लक्ष्य' मानते हैं.

भद्रलोक शब्द बंगाली संस्कृति का प्रतीक है. 19वीं शताब्दी के बंगाल रेनेसां के दौरान यह शब्द उभरा, जब ब्राह्मण, कायस्थ और वैद्य समुदायों ने शिक्षा, साहित्य और प्रशासन पर कब्जा किया. भद्रलोक को 'जेंट्री' या 'इंटेलिजेंटसिया' कहा जाता है. ये वे लोग हैं जो कोलकाता के कॉफी हाउस, रवींद्र सदन और दुर्गा पूजा की सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़े हैं. ऐतिहासिक रूप से, बंगाल की सत्ता भद्रलोक के हाथ रही है. स्वतंत्रता के बाद सीपीआई(एम) के 34 वर्षों के शासन में ज्योति बसु (कायस्थ) 23 वर्ष मुख्यमंत्री रहे, जबकि विधान चंद्र रॉय (कायस्थ) 14 वर्ष तक मुख्यमंत्री रहे. कुल 37 वर्ष कायस्थ मुख्यमंत्रियों के हाथ में पश्चिम बंगाल की सत्ता रही. सुभाष चंद्र बोस, स्वामी विवेकानंद जैसी महान विभूतियां भी कायस्थ थे. भद्रलोक वोट (लगभग 15-20%) शहरी क्षेत्रों में निर्णायक होता है. और सबसे बड़ी बात यह है कि यह भद्रलोक ही बंगाल में माहौल बनाता है. ये लोग जो करते हैं बाकी लोग उनका अनुसरण करते हैं. यूपी और बिहार की तरह यहां का पिछड़ा समुदाय खुद को इन भद्रलोक से प्रतिस्पर्धा या चुनौती के रूप में नहीं देखता है. भद्रलोक की विशेषता रही है कि ये लोग खुद को बौद्धिक समझते रहे हैं. इसके कारण ये अपने को सेकुलर कहलाने में गर्व फील करते रहे हैं. शायद वाम दलों के लंबे समय तक शासन में रहने के चलते भी ये कारण रहा हो. दक्षिणपंथी विचारधारा को ये लोग बहुत हेय दृष्टि से देखते रहे हैं. भाजपा ये समझ गई है कि बंगाल पर विजय हासिल करना है तो यहां के भद्रलोक में पैठ बनानी होगी. यही कारण रहा है कि हाल के वर्षों में आरएसएस ने यहां की सांस्कृतिक गतिविधियों में घुसने का प्रयास किया है. भाजपा जानती है कि भद्रलोक को इम्प्रेस करने से शहरी वोटबैंक मजबूत होगा. पश्चिम बंगाल की राजनीति हमेशा से जटिल रही है. 2021 के चुनावों में भाजपा ने 18% वोट शेयर के साथ 77 सीटें जीतीं, लेकिन टीएमसी ने 213 सीटों पर कब्जा जमा लिया था. 2026 में भाजपा का लक्ष्य 'मिशन 200' है. लेकिन चुनौतियां कम नहीं. ममता बनर्जी की 'बंगाली अस्मिता' की राजनीति ने भाजपा पर 'बाहरी' का ठप्पा लगा दिया है. इसके अलावा, मुस्लिम वोट बैंक (लगभग 27%) टीएमसी के पक्ष में है, जबकि हिंदू वोट (लगभग 70%) में विभाजन भाजपा के लिए अवसर है. पश्चिम बंगाल की राजनीति में 'भद्रलोक' शहरी, शिक्षित ऊपरी जाति (ब्राह्मण, कायस्थ, वैद्य) का प्रतीक हमेशा से निर्णायक रहा है. 2026 के विधानसभा चुनावों से पहले भाजपा की नजर इसी वर्ग पर है. बिहार की ऐतिहासिक जीत के बाद, पार्टी 'मिशन बंगाल' में ममता बनर्जी के 'बाहरी' के आरोप को उलट सके, ऐसा चाहती है. भाजपा जानती है कि भद्रलोक (लगभग 15-20% वोटर) शहरी कोलकाता और उत्तरी बंगाल में फैला है, जहां टीएमसी का दबदबा है. अब पार्टी भाजपा 'बंगाली प्राइड' को अपनाने की कोशिश कर रही है. अमित शाह की अगुवाई में 'ऑपरेशन सिंदूर' और सांस्कृतिक कार्यक्रमों से बंगाली आइडेंटिटी को हाईजैक करने का प्लान है. बंगाली अस्मिता भाजपा के लिए सबसे बड़ा रोड़ा है. ममता ने 'जय बंगाल' और दुर्गा पूजा को अपनी ब्रांडिंग का हथियार बना लिया है, जबकि भाजपा को 'उत्तर भारतीय' ठप्पा लगा दिया है. केंद्र की एनडीए सरकार ने संसद में वंदे मातरम डिबेट भी इसलिए ही कराया. एक रिपोर्ट के मुताबिक, भाजपा का 'आउटसाइडर' टैग 2021 में ही नुकसानदेह साबित हुआ. बीजेपी की कोशिश होगी आगामी विधानसभा चुनावों तक इससे मुक्त हो सके. नितिन नवीन भाजपा के पारंपरिक 'हिंदुत्व' चेहरे से अलग है. वे ममता बनर्जी के 'भावुक' स्टाइल का काउंटर कर सकते हैं. नवीन की नियुक्ति पर राजद के प्रवक्ता मृत्युंजय तिवारी ने जिस तरह से उनकी तारीफ की है वह बताता है कि नवीन की कार्यशैली आम नेताओं से अलग हटकर है. नियुक्ति के तुरंत बाद एक टीवी इंटरव्यू में नितिन ने कहा, हम बंगाल भी जीतेंगे. एक्स पर एक यूजर ने लिखा, नितिन नवीन कायस्थ भद्रलोक वोट प्रभावित करेंगे, जो बंगाल का बड़ा चंक है. एसआईआर से कांगलू (पिछड़ी जातियों) का ध्यान रखा जा रहा है. यह भाजपा का पिंसर मूव है. नवीन का कायस्थ कनेक्शन महत्वपूर्ण है, क्योंकि बंगाल में कायस्थ वोट भद्रलोक का कोर है. बोस, मित्रा, घोष जैसे उपनाम वाले कायस्थ परिवार भाजपा की ओर झुक सकते हैं, अगर विकास और सांस्कृतिक अपील हो. दरअसल, नितिन नवीन का जन्म 1980 में पटना, बिहार में एक कायस्थ परिवार में हुआ था. कायस्थ समुदाय, जो परंपरागत रूप से प्रशासनिक और बौद्धिक कार्यों से जुड़ा रहा है, बिहार और बंगाल दोनों राज्यों में प्रभावशाली है. नितिन ने अपनी शिक्षा पटना से पूरी की और शुरू में राजनीति से दूरी बनाए रखी. लेकिन 2005 में वे भाजपा से जुड़े और लगातार चुनाव जीतते आ रहे हैं. नियुक्ती के समय वे बिहार सरकार में सड़क निर्माण मंत्री रहे, अब इस्तीफा दे दिए हैं. उनकी छवि एक 'सॉफ्ट' और युवा नेता की है, जो अमित शाह के करीबी माने जाते हैं. भाजपा युवा मोर्चा (बीजेवाईएम) के राष्ट्रीय महासचिव रह चुके नितिन ने बिहार में पार्टी को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई. 2025 के बिहार चुनावों में भाजपा को ऐतिहासिक जीत दिलाने में उनकी मेहनत सराहनीय रही. पीएम मोदी ने खुद उनकी नियुक्ति पर बधाई दी, ये कहते हुए कि नितिन नवीन जैसे युवा नेता पार्टी को नई ऊर्जा देंगे.

नीतीश अभ्युदय 2025

75 के उम्र में दिखाया 60 वाला जलवा

अखिलेश कुमार

बिहार विधानसभा चुनाव परिणाम 2025 ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि राजनीति में उम्र कोई मायने नहीं रखती है। साथ हीं साथ लोकतांत्रिक व्यवस्था में उम्र निर्धारण को लेकर चल रही बहस के विषय पर सोचने को बाध्य किया है। क्योंकि यहां के चुनाव परिणाम काफी चौंकाने वाला रहा है और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार 75 वर्ष के उम्र में पन्द्रह वर्ष पूर्व वाले अभूतपूर्व सफलता को पुनः दोहराते हुए अपने नेतृत्व क्षमता का लोहा मनवाया है तथा यह साबित कर दिया कि वे सचमुच राजनीति के चाणक्य हैं। बिहार का ये चुनाव परिणाम केवल राज्य की राजनीति हीं नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी बड़ा संदेश दिया है तथा इसके गहरे सियासी मायने हैं।

दरअसल हाल के वर्षों में नीतीश कुमार के चर्चा में आए कुछ हरकतों को लेकर जिस तरह का नैरेटिव सेट किया जा रहा था वह न केवल चुनाव नतीजों के बाद हवा हो गया बल्कि उनके व्यक्तित्व और रणनीतिक समझदारी का भी लोहा मनवाया। हालांकि एनडीए समाजिक गठबंधन को देखकर यह अनुमान तो पहले से हीं लगाया जा रहा था कि इसकी पुनः वापसी संभव है परन्तु विपक्षी दलों को धूल चटाते हुए ऐसा अपार बहुमत आएगा, यह कल्पना नीतीश कुमार के सहयोगी भी नहीं कर रहे थे।

वर्ष 2005 के प्रथम चुनाव में स्पष्ट बहुमत नहीं मिलने के बाद राष्ट्रपति शासन लगाया गया था और उसी वर्ष जब दुसरी बार चुनाव हुआ तो भाजपा जदयू गठबंधन सत्ता में आई थी। इसके बाद नीतीश कुमार के नेतृत्व में बेकाबू हुए अपराध तथा उग्रवाद पर नियंत्रण के साथ हीं शिक्षा, चिकित्सा, स्वस्थ, सड़क आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति के बाद 2010 विधानसभा चुनाव में उनके नेतृत्व ने ऐसा जनसमर्थन हासिल किया कि राजद को सदन में विपक्षी दल की मान्यता पाने के लिए लाले पड़ गए थे। 2005 विधानसभा चुनाव में 75 विधायक वाली पार्टी 2010 में 22 पर सिमट गई थी और 243 सदस्यों वाले सदन में विपक्षी दल की मान्यता हेतु 25 का अंक नहीं जुटा पाई।

हालांकि नीतीश कुमार पाला बदलते हुए 2015 के विधानसभा चुनाव में भाजपा का दामन छोड़कर राजद से गठबंधन कर मैदान में उतारे थे और सत्ता पर काबिज होने में कामयाब रहे। वहीं 2020 विधानसभा चुनाव में राजद के विरोध में पुनः भाजपा के साथ मिलकर लड़े तथा सत्ता बरकरार रखने में पुनः कामयाबी हासिल कर ली। परन्तु 2010 वाला जलवा नहीं दिखा पाए।

वर्ष 2014 में 20 मई से 20 फरवरी 2015 तक के नव माह का जीतनराम मांझी वाले मुख्यमंत्रित्व कार्यकाल को दरकिनार कर दिया जाए तो वो करीब 20 वर्षों से लगातार बिहार के सत्ता पर काबिज हैं। इस दौरान नीतीश कुमार अनेक बार गठबंधन तोड़ते और जोड़ते रहे। जिसके चलते उनके साथ रहने वाले भी पलटु राम तथा पलटु चाचा कहने लगे। लेकिन इन सबके बावजूद 55 के उम्र में बिहार के बागडोर संभालने वाले नीतीश ने 75 के उम्र में भी अपना जनाधार खिसकने नहीं दिया, बल्कि उसपर मजबूत पकड़ दिखाते राजनीतिक विश्लेषकों को भी

आश्चर्यचकित कर दिया है और खुद के राजनीतिक कुशलता में निखार लाया है।

सम्पन्न हुए बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में नीतीश कुमार के नेतृत्व वाले राजग गठबंधन ने 243 में 202 सीटों का ऐतिहासिक जीत हासिल किया। जिसमें जदयू की 85, भाजपा की 89, लोजपा आर की 19, हम की 5 तथा रालोमो की 4 सीटें शामिल है। जबकि तेजस्वी यादव के नेतृत्व वाले महागठबंधन में 75 सीटों वाली राजद मात्र 25 सीटों पर सिमट गई। उसी तरह कांग्रेस को मात्र 6, सीपीआई (एमएल) लिबरेशन को 2 और सीपीएम तथा आईआईएम को मात्र एक एक सीटें हासिल हुई है। उधर ओवैसी के नेतृत्व वाली एआईएमआईएम को पांच तथा बसपा भी एक सीट हासिल करने में कामयाब रही है। चुनाव से पहले महागठबंधन की सरकार बनने पर खुद को उपमुख्यमंत्री बनने की घोषणा करने वाले वीआइपी पार्टी सुप्रीमो मुकेश साहनी तो जीरो पर हीं आउट हो गए। दरअसल नीतीश कुमार के सामने पिछले 20 वर्षों में भी कोई ऐसा नेतृत्व खड़ा नहीं हो सका जो बिहार में विकास की लकीर नीतीश से बड़ा खिंचने का दावा करते हुए यहां के मतदाताओं का भरोसा हासिल कर सके। नीतीश कुमार ने हीं राजद के डुबती नैया को 2015 में सहारा देते हुए गठबंधन किया तथा तेजस्वी यादव उपमुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठाकर बिहार में एक युवा चेहरे को भविष्य का विकल्प दिखाया। परन्तु पिता के साथ परिवार पर भ्रष्टाचार की छाया और एमवाई समीकरण की रेखा से ऊपर उठकर वृहद समाजिक समिकरण बनाने में उनकी विफलता ने नीतीश कुमार के मैदान को एक तरह से खाली छोड़ दिया। वर्ष 2025 विधानसभा चुनाव से पहले राजनीतिक रणनीतिकार कहे जाने वाले प्रशांत किशोर ने खुद को विकल्प के रूप प्रस्तुत करने का जी-तोड़ मेहनत जरूर की।

और जन सुराज के वैनर तले अभियान चलाकर गांव गांव तक लोगों को जुड़ने का प्रयास किया। परन्तु नीतीश कुमार की चाण्क्य नीति ने उन्हें बुरी तरह धुल चटा दी और वो अपने दल का खाता खुलवाना तो दूर, प्रायः सभी सीटों पर उनके उम्मीदवारों की जमानत भी जब्त हो गई। जन सुराज को कुछ सीटें हासिल होने की उम्मीद जरूर थी, परन्तु भाजपा जदयू के प्रचार तंत्र द्वारा लालू राबड़ी के कथित जंगल राज जैसा स्थिति बहाल होने पेश किए जा रहे अंदेशा ने उनके वोटरों को राजग गठबंधन के तरफ शिफ्ट कराने में कामयाब हुआ।

नीतीश कुमार ने पिछले 20 वर्षों के शासन में राजनीतिक दांव पेंच के तहत भले हीं चार बार पलटी मारी, लेकिन अपने चरित्र पर चवन्नी भर भी दाग नहीं लगने दिया। वो अपने व्यक्तित्व को लेकर हमेशा सजग रहे। भाई भतीजावाद तथा परिवारवाद के दौर में उनके करीबियों तथा सहयोगी दलों ने सम्पन्न चुनाव से पहले उनके पुत्र नीशांत कुमार को राजनीति में इन्ट्री कराने को लेकर खुब कवायद शुरू किया। जदयू नेता सहित सहयोगी दलों के नेता उपेन्द्र कुशवाहा, जीतनराम मांझी, चिराग पासवान ने भी इसके पक्ष में कसीदे पढ़े, परन्तु नीतीश कुमार ने उन सबों का कोई नोटिस हीं नहीं लिया। वे अपने करीब पांच दशक के राजनीतिक कैरियर में भ्रष्टाचार तथा परिवारवाद के आरोपों से खुद को पुरी तरह अछूता रखे हुए हैं।

दरअसल बिहार में नीतीश कुमार के नेतृत्व में आश्चर्यजनक सफलता के पिछे उनका स्वच्छ छवि तथा सशक्त विपक्ष का अभाव के साथ हीं कल्याणकारी योजनाएं भी काफी प्रभावी साबित हुआ। पहले से चलाए जा रहे नल जल योजना, पोषण योजना, छात्राओं के लिए साइकिल योजना, स्वयं सहायता समूह आदि तो लुभावनी थी हीं, ठीक चुनाव से पहले जीविका दीदी को दस दस हजार रुपए खाते में भेजकर उसे वापस नहीं लेने का का निर्णय चमत्कारी मंत्र बना। इसके साथ हीं चुनाव से पहले बेरोजगारी भत्ता, वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन के साथ हीं आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, टोला सेवक, शिक्षक आदि के वेतन में वृद्धि ने कर्मचारियों में सरकार के प्रति चल रही नाराजगी को समाप्त कर दिया।

अमनौर में भोजपुरी का महाकुंभ: डॉ. संजय मयूख ने नेतृत्व से रचा इतिहास

अनूप नारायण सिंह

अमनौर की धरती ने वह दृश्य देखा, जिसे वर्षों बाद भी भोजपुरी समाज गर्व के साथ याद करेगा। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का दो दिवसीय भव्य आयोजन बिहार के सारण जिले के अमनौर में हुआ और इस आयोजन की धुरी बने भाजपा के विधान परिषद सदस्य, पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता और भोजपुरी भावना के सच्चे संवाहक डॉ. संजय प्रकाश मयूख। अल्प समय में जिस दक्षता, सादगी, व्यापकता और गहरी सांस्कृतिक समझ के साथ उन्होंने इस सम्मेलन का संचालन किया, वह न सिर्फ प्रशंसनीय है, बल्कि आने वाले आयोजनों के लिए एक मानक भी बन गया।डॉ. मयूख के नेतृत्व में हुए इस सम्मेलन का उद्घाटन बिहार के गृह मंत्री सम्राट चौधरी ने किया। उद्घाटन क्षण से लेकर समापन तक मंच पर बिहार सरकार के मंत्री, सांसद, विधायक, जनप्रतिनिधि और देशझविदेश के साहित्यकारों की उपस्थिति ने साबित किया कि यह आयोजन सिर्फ एक सांस्कृतिक समारोह नहीं, बल्कि भोजपुरी अस्मिता का उत्सव था। भाजपा सांसद मनोज तिवारी और अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त गायिका कल्पना पटवारी जैसे दिग्गज कलाकारों की मौजूदगी ने समारोह को जनझजन तक पहुँचाने में अभूतपूर्व

भूमिका निभाई।लेकिन इस पूरे उत्सव का केंद्र जहाँ चमकते चेहरे थे, वहीं इसकी आत्मा वह व्यक्ति थे जिन पर यह पूरा विराट आयोजन टिका था—डॉ. संजय प्रकाश मयूख। यह सम्मेलन उनके सांस्कृतिक संस्कारों, पिता की साहित्यिक विरासत और भोजपुरी के प्रति उनके नैसर्गिक समर्पण की परिणति था। उनके पिता भोजपुरी के प्रतिष्ठित साहित्यकार और राज्य के चर्चित शिक्षाविद रहे हैं। भोजपुरी साहित्य की गंध उनके संस्कारों में बचपन से बसती रही है। शायद इसी कारण जब उन्हें आयोजन समिति का नेतृत्व मिला, तो उन्होंने इसे किसी पद की जिम्मेदारी नहीं बल्कि पिता की अधूरी पाती और भोजपुरी के प्रति अपना ऋण समझकर निभाया।इस सम्मेलन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि दो दिनों तक अमनौर की फिजाओं में भोजपुरी की आत्मा गूंजती रही। एक मंच पर साहित्य, संगीत, कला, आलोचना, शोध और भविष्य की दिशा का गंभीर मंथन हुआ। इस मंथन को जनसहभागिता का ऐसा स्वर मिला कि अमनौर का मैदान सांस्कृतिक मेले की तरह खचाखच भरा रहा। यह भोजपुरी की लोकप्रियता का नहीं, बल्कि उसकी गहराई, व्यापकता और गंभीरता का प्रमाण था।डॉ. संजय मयूख ने यह साबित किया कि सच्चा नेतृत्व सिर्फ भीड़ जुटाने का नाम नहीं, बल्कि संस्कृति को सम्मान देने और समाज को जोड़ने का सामर्थ्य है। उन्होंने न सिर्फ सम्मेलन को सफल बनाया, बल्कि यह भी दिखा दिया कि भोजपुरी सिर्फ मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि एक समृद्ध भाषा, जीवंत संस्कृति और करोड़ों लोगों की पहचान है।अमनौर का यह आयोजन भोजपुरी इतिहास में एक मील का पत्थर बनकर दर्ज हो गया है। और इसके केंद्र में एक ही नाम है—डॉ. संजय प्रकाश मयूख—जिन्होंने अपने नेतृत्व, संवेदना और संकल्प से भोजपुरी की प्रतिष्ठा को नई ऊँचाई दी।

डॉ. संजय मयूख : सत्ता के शिखर पर भी आत्मीयता का उजास

अनूप ना सिंह

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता और बिहार से दूसरे टर्म के विधान परिषद सदस्य डॉ. संजय मयूख का नाम आज राजनीति में उस व्यक्तित्व के रूप में लिया जाता है, जहां पद और प्रतिष्ठा के साथ विनम्रता, आत्मीयता और संगठननिष्ठा का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है। राजनीति में ऐसे चेहरे कम ही होते हैं, जो शीर्ष पर पहुंचने के बाद भी अपने लोगों से उतनी ही गर्मजोशी से जुड़े रहते हैं, जितने संघर्ष के दिनों में रहते थे—डॉ. मयूख उन्हीं में से एक हैं।एक प्रसंग आज भी स्मृतियों में ताजा है। जब अरुण कुमार सिन्हा का टिकट कुम्हरार से कटने की चर्चा थी, तब स्वाभाविक रूप से नए नामों पर मंथन शुरू हुआ। हालांकि उस समय मीडिया में उनके नाम की खूब चर्चा थी, लेकिन सत्ता की चाह से दूर रहकर संगठन को प्राथमिकता देना, उनके राजनीतिक चरित्र का स्थायी भाव रहा है।आज फिर राजनीति के गलियारों में हलचल है। नितिन नवीन का राज्यसभा जाना लगभग फाइनल माना जा रहा है और ऐसे में बांकीपुर विधानसभा सीट खाली हो रही है। चचाओं में कई नाम हैं, लेकिन सबसे प्रमुखता से जो नाम उभरकर सामने आ रहा है, वह एक बार फिर डॉ. संजय मयूख का है। दिलचस्प बात यह है कि वे फिलहाल बिहार विधान परिषद के सदस्य हैं, इसके बावजूद कयास लगाए जा रहे हैं। मगर खबर यही है कि इस बार भी विधानसभा चुनाव लड़ने को लेकर वे खास उत्साहित नहीं हैं। उनका झुकाव आज भी संगठन के काम में रहकर पार्टी को मजबूत करने की दिशा में ही है।डॉ. संजय मयूख की सबसे बड़ी खासियत यही है कि राजनीति के शिखर पर पहुंचने के बाद भी उनके भीतर कोई अहंकार नहीं आया। अपने लोगों के प्रति आत्मीयता, कार्यकताओं के प्रति स्नेह और संवाद में अपनापन—ये गुण उन्हें भीड़ से अलग पहचान देते हैं। किसी भी काम के लिए, किसी भी समय उन्हें फोन कीजिए। चाहे वे दिल्ली में हों या पटना में, व्यस्तता के बीच भी जैसे ही फुर्सत मिलेगी, उधर से कॉल बैक जरूर आएगा। और सिर्फ औपचारिक आश्वासन नहीं, समस्या का वास्तविक समाधान होगा—यही उनका स्वभाव है।उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट रहती है। किसी के लिए मन में कटुता नहीं, न ही किसी प्रकार की राजनीतिक द्वेष भावना। 24 घंटे पार्टी के लिए समर्पित रहना उनके जीवन का अनुशासन है। शायद यही कारण है कि संगठन में उन्हें एक भरोसेमंद स्तंभ के रूप में देखा जाता है—ऐसा नेता, जो स्वयं आगे आने की बजाय कार्यकताओं को आगे बढ़ते देखना चाहता है।आज के दौर में, जब राजनीति में पद की होड़ और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा अक्सर प्राथमिक हो जाती है, डॉ. संजय मयूख जैसे नेता यह याद दिलाते हैं कि राजनीति केवल चुनाव लड़ने का नाम नहीं, बल्कि संगठन को सींचने, लोगों से जुड़े रहने और मूल्यों को जीवित रखने की सतत साधना भी है। यही वजह है कि उनका नाम बार-बार चर्चा में आता है—चुनाव के लिए नहीं, बल्कि भरोसे के लिए। संजय मयूख की बार-बार चर्चा इसलिए होती है कि जो लोग राजनीति में आने को उत्सुक है या राजनीति में आ चुके हैं उन्हें संघर्ष से नहीं घबराना चाहिए।

बीजेपी का वॉच टावर ब्रजेश सिंह रमण जैसे कार्यकर्ताओं को क्यों नहीं देखता...

अनूप नारायण सिंह

लगभग तीन से साढ़े तीन दशकों से भारतीय जनता पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में निरंतर काम कर रहे सारण जिले के एकमा प्रखंड निवासी ब्रजेश सिंह रमण को शायद ही भाजपा संगठन का कोई पदाधिकारी या कार्यकर्ता होगा, जो न जानता हो। जमीनी राजनीति और संगठनात्मक कार्यशैली में उनकी पहचान किसी पद की मोहताज नहीं रही है।वर्तमान में बिहार प्रदेश भाजपा कार्य समिति के सदस्य ब्रजेश सिंह रमण उन कार्यकताओं के लिए प्रेरणा हैं, जो वर्षों से बिना किसी पद, सत्ता या व्यक्तिगत लाभ की आकांक्षा के पार्टी की सेवा करते आ रहे हैं। राजनीति में अवसर कई बार आए, लेकिन पार्टी हित में हर बार उनसे ही त्याग की अपेक्षा की गई—और उन्होंने उसे सहज रूप से स्वीकार भी किया।

ब्रजेश सिंह रमण की प्रासंगिकता आज इसलिए भी बढ़ जाती है क्योंकि हाल ही में भाजपा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बने नितिन नवीन यह कहते रहे हैं कि पार्टी का टावर बहुत मजबूत है, और उसका वॉच टावर संगठन के लिए समर्पित कार्यकर्ता हैं। लेकिन जब ऐसे समर्पित कार्यकताओं की चर्चा होती है, तो सवाल भी उठते हैं कि क्या संगठन ने ब्रजेश सिंह रमण जैसे निष्ठावान कार्यकताओं को वह पहचान दी, जिसके वे हकदार थे?

खुद कार्यकर्ता वर्ग में यह चर्चा आम है कि यदि ब्रजेश सिंह रमण किसी अन्य जातीय पृष्ठभूमि से होते, तो शायद उनकी ओर देखने का नजरिया अलग होता।

अपने राजनीतिक सफर को लेकर ब्रजेश सिंह रमण साफ कहते हैं कि उन्होंने पूरा जीवन भाजपा को समर्पित किया है—पद के लिए नहीं, बल्कि उस आत्म-प्रतिबद्धता के लिए जो उन्होंने स्वयं से की थी। यह प्रतिबद्धता किसी मंच, पद या प्रचार से नहीं, बल्कि संगठन के लिए किए गए सतत कार्य से झलकती है।राजनीतिक अनुभव की बात करें तो ब्रजेश सिंह रमण ने भाजपा के अपने दौर के बड़े नेता रहे शत्रुघ्न सिन्हा के साथ भी काम किया।

इसके बाद डॉ. सी.पी. ठाकुर से लेकर भाजपा के कई वरिष्ठ नेताओं के साथ संगठनात्मक जिम्मेदारियाँ निभाईं। समय के साथ कई लोग आगे बढ़ते गए, सत्ता और पद तक पहुँचे, लेकिन ब्रजेश सिंह रमण संगठन में ही डटे रह गए—न शिकायत, न अपेक्षा।आज जब भाजपा संगठन अपनी मजबूती और विस्तार पर गर्व करता है, तब ब्रजेश सिंह रमण जैसे कार्यकर्ता यह याद दिलाते हैं कि किसी भी राजनीतिक दल की असली ताकत मंच पर दिखने वाले चेहरे नहीं, बल्कि पर्दे के पीछे वर्षों तक ईंट-दर-ईंट संगठन खड़ा करने वाले सच्चे सिपाही होते हैं।

नीतीश कुमार का कोई विकल्प नहीं, बिहार को विकास की मुख्यधारा में लाने का श्रेय उन्हीं को : छोटू सिंह

जनता दल यूनाइटेड के प्रदेश महासचिव एवं बिहार राज्य नागरिक परिषद के महासचिव अरविंद कुमार सिंह और जदयू नेता छोटू सिंह ने कहा है कि बिहार की राजनीति में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का कोई विकल्प नहीं है। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार ने बिहार में विकास की जो ह्लबड़ी लकीर खींची है, उसके आसपास भी कोई नहीं है।

दोनों नेताओं ने संयुक्त बयान में कहा कि नीतीश कुमार ने बिहार को अराजकता और पिछड़ेपन के दौर से निकालकर विकास के पथ पर मजबूती से आगे बढ़ाया है। सड़क, शिक्षा, बिजली, पानी, स्वास्थ्य और चिकित्सा सहित हर क्षेत्र में ऐतिहासिक प्रगति हुई है। यही वजह है कि बिहार की जनता ने लगातार भरोसा जताते हुए 10वीं बार एनडीए को 200 पार का जनादेश देकर नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली सरकार को तोहफा दिया है।

उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार का शासन मॉडल आज पूरे देश के लिए उदाहरण है। सुशासन, पारदर्शिता और सामाजिक न्याय के साथ विकास की जो मिसाल बिहार में कायम हुई है, उसने राज्य की तस्वीर और तकदीर दोनों बदल दी है।निशांत कुमार के राजनीति में आने के सवाल पर दोनों नेताओं ने कहा कि अगर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के पुत्र निशांत कुमार सक्रिय राजनीति में आते हैं तो यह स्वागत योग्य होगा। उन्होंने कहा कि निशांत कुमार का सार्वजनिक जीवन में आना बिहार की राजनीति के लिए सकारात्मक संकेत होगा।अरविंद कुमार सिंह और छोटू सिंह ने यह भी कहा कि बिहार के सर्वांगीण विकास में दिए गए ऐतिहासिक योगदान के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को नोबेल पुरस्कार मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार ने जिस तरह सामाजिक सुधार, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में काम किया है, वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराहना के योग्य है।उन्होंने भरोसा जताया कि आने वाले समय में भी नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार विकास की नई ऊंचाइयों को छुएगा और राज्य देश के अग्रणी राज्यों की कतार में मजबूती से खड़ा होगा।

लेट्स इंस्पायर बिहार : बदलाव का गैर राजनीतिक मंच, नेतृत्व की नई परिभाषा

अनूप नारायण सिंह

21 मार्च 2026 को लेट्स इंस्पायर बिहार अपने पाँच वर्ष पूरे करने जा रहा है। महज पाँच वर्षों में यह अभियान बिहार के सामाजिक, शैक्षणिक और वैचारिक परिदृश्य में एक ऐसे प्रभावशाली आंदोलन के रूप में उभरा है, जिसने लाखों लोगों को सक्रिय रूप से जोड़ा है। बिहार के चर्चित आईपीएस अधिकारी और वर्तमान में बिहार पुलिस में आईजी के पद पर कार्यरत विकास वैभव के कुशल, प्रेरक और निःस्वार्थ नेतृत्व में यह अभियान आज शिखर की ओर अग्रसर है।

लेट्स इंस्पायर बिहार ने शिक्षा, सामाजिक सशक्तिकरण और स्वरोजगार को अपने मूल में रखते हुए हर उस बिहारी से संवाद स्थापित किया है, जो जाति, धर्म और राजनीतिक विचारधाराओं से ऊपर उठकर बिहार के लिए कुछ ठोस करना चाहता है। यही कारण है कि यह अभियान सिर्फ एक संगठन नहीं, बल्कि एक जनआंदोलन का रूप ले चुका है।

बिहार से देश तक गूँज

जब भी बिहार में औद्योगिक क्रांति, उद्यमिता या मानव संसाधन विकास को लेकर कोई बड़ा कार्यक्रम लेट्स इंस्पायर बिहार के बैनर तले आयोजित होता है, तो देश भर की निगाहें उस पर टिक जाती हैं। दिल्ली, बेंगलुरु सहित देश के कई बड़े शहरों में आयोजित कार्यक्रमों ने यह साबित किया है कि बिहार की नई सोच अब राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बन रही है।

नमस्ते बिहार और जनभागीदारी की ताकत

बिहार के कई जिलों में आयोजित नमस्ते बिहार कार्यक्रमों के माध्यम से जिस तरह लाखों की भीड़ उमड़ी, उसने यह स्पष्ट कर दिया कि बिहार की जनता सिर्फ राजनीतिक मंचों से किए गए वादों पर ही भरोसा नहीं करती। वे उन लोगों के साथ भी खड़े हैं, जो बिना किसी लोभ-लाभ के, जमीन पर उतरकर वास्तविक बदलाव के लिए काम कर रहे हैं। आईपीएस विकास वैभव ने इस जनसमर्थन के माध्यम से यह संदेश दिया कि नेतृत्व पद से नहीं, भरोसे से बनता है।

2017 से शुरू हुआ विचार, 2047 का विजन

इस आंदोलन की जड़ें 2017 में मिलती हैं, जब पटना के विक्रम निवासी इंजीनियर कुमार राहुल और सारण जिले के एकमा निवासी विकास शाही ने युवा जागरूक संगठन के माध्यम से आईपीएस विकास वैभव के नेतृत्व में पटना में पहला कार्यक्रम आयोजित किया। इसके बाद श्रीकृष्ण विज्ञान केंद्र और तारामंडल जैसे प्रतिष्ठित स्थलों पर कार्यक्रम हुए। इन कार्यक्रमों की सफलता ने यह स्पष्ट कर दिया कि बिहार को एक बड़े, समावेशी और गैर-राजनीतिक मंच की आवश्यकता है।

यहीं से उस मंच की नींव पड़ी, जिसका विजन स्पष्ट था—2047 तक बिहार को देश का अग्रणी राज्य बनाना। धीरे-धीरे वे सभी लोग, जो बिहार में वास्तविक बदलाव चाहते थे, आईपीएस विकास वैभव के नेतृत्व में एकजुट होते चले गए।

विकास वैभव : नेतृत्व की नई पहचान

विकास वैभव सिर्फ एक पुलिस अधिकारी नहीं, बल्कि बिहार की आकांक्षाओं के संवाहक बन चुके हैं। उनका नेतृत्व आदेश देने वाला नहीं, बल्कि प्रेरित करने वाला है। उन्होंने यह साबित किया है कि प्रशासनिक जिम्मेदारियों के साथ भी सामाजिक नेतृत्व किया जा सकता है—वह भी पूरी ईमानदारी और संवेदनशीलता के साथ।

लेट्स इंस्पायर बिहार आज बिहार के उस नेतृत्व का प्रतीक है, जो सत्ता की नहीं, सेवा की बात करता है; जो नारों की नहीं, नीतियों और प्रयासों की बात करता है। पाँच वर्षों की यह यात्रा संकेत देती है कि यदि दिशा सही हो और नेतृत्व ईमानदार, तो बिहार के सपनों को साकार होने से कोई नहीं रोक सकता।

बेंगलुरू में बिहार @ 2047 विजन स्टार्ट अप कॉन्क्लेव की ऐतिहासिक सफलता 1200 से अधिक प्रतिभागियों की मौजूदगी

बेंगलुरू स्थित ऑक्सफोर्ड कॉलेज सभागार में Lets Inspire Bihar अभियान के अंतर्गत आयोजित बिहार @ 2047 विजन कॉन्क्लेव (सीजन-3 : स्टार्ट-अप) ने बिहार के विकास को लेकर देश-दुनिया में नई उम्मीद और ऊर्जा का संचार किया। इस ऐतिहासिक आयोजन में बिहार सरकार के माननीय उद्योग मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल उद्घाटनकर्ता सह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने देश-विदेश से आए एंजल निवेशकों, स्टार्ट-अप संस्थापकों, युवा नेतृत्वकर्ताओं, उद्यमियों, कॉर्पोरेट पेशेवरों एवं महिलाओं को संबोधित करते हुए बिहार में स्टार्ट-अप्स, नवाचार और उद्यमिता की आवश्यकता तथा राज्य

सरकार की भावी औद्योगिक योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी।इस अवसर पर अभियान के संस्थापक और चर्चित आईपीएस अधिकारी विकास वैभव ने अपने प्रेरक संबोधन में विकास वैभव ने कहा कि छी३२ क्ल्ल२स्न्न१ ड्ढ१ आज केवल एक अभियान नहीं, बल्कि पूरे देश और दुनिया में बसे बिहारियों को एक सूत्र में बांधने वाला सबसे बड़ा सामाजिक आंदोलन बन चुका है। उन्होंने कहा,बिहार की असली ताकत उसके लोग हैं। जब दुनिया भर में बसे बिहारी जाति, संप्रदाय, भाषा और विचारधारा से ऊपर उठकर बिहार के विकास के लिए एकजुट होते हैं, तो वही सामूहिक चेतना बिहार को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगी। लेट्स

इंस्पायर बिहार का उद्देश्य हर बिहारी को यह महसूस कराना है कि बिहार का भविष्य उसी के हाथ में है।विकास वैभव ने यह भी कहा कि स्टार्ट-अप और उद्यमिता के माध्यम से बिहार के हर पंचायत तक आर्थिक अवसर पहुंचाना ही बिहार @ 2047 विजन का मूल लक्ष्य है।कॉन्क्लेव में विशेष रूप से बिहार से बेंगलुरू पधारे बैकुंठपुर के विधायक मिथिलेश कुमार तिवारी, डेहरी के विधायक राजीव रंजन सिंह उर्फ सोनू सिंह तथा बिहार भाजपा प्रदेश कार्य समिति के सदस्य सोनू शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को और प्रभावशाली बनाया। नेताओं के वक्तव्यों से उपस्थित युवा उद्यमियों और निवेशकों में विशेष उत्साह देखने को मिला।कॉन्क्लेव की मुख्य आयोजक प्रियंका झा एवं छी३२ क्ल्लर२स्त्र१ ई१ बेंगलुरू अध्याय की कोर टीम के समर्पण का परिणाम रहा कि सभागार की क्षमता से अधिक 1200 से ज्यादा प्रतिभागी देश-विदेश से इस आयोजन में शामिल हुए।

कार्यक्रम के दौरान ह्यबिहार @ 2047 विजन डॉक्यूमेंटह्ल का विमोचन किया गया, जिसमें विकसित बिहार के निर्माण का विस्तृत रोडमैप साझा किया गया। आयोजकों ने बताया कि अभियान से अब तक 3 लाख से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सदस्य सीधे तौर पर जुड़ चुके हैं।

आगामी चरण में 18 जनवरी 2026 को हैदराबाद के टी-हब तथा 22 फरवरी 2026 को दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में ह्यबिहार डेवलपमेंट समिट 2026ह्ल का आयोजन प्रस्तावित है। कार्यक्रम का समापन इस संकल्प के साथ हुआ कि स्टार्ट-अप्स और उद्यमिता के माध्यम से बिहार को देश के अग्रणी राज्यों की श्रेणी में लाया जाएगा। अभियान के राष्ट्रीय मीडिया कोऑर्डिनेटर अनूप नारायण सिंह ने पटना में एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर यह जानकारी दी।

बेगूसराय में लाल झंडा क्या अनफिट हो गया

महेश भारती

कभी बिहार का लेनिनग्राड और मास्को कहे जाने वाले बेगूसराय में लाल झंडा क्या अनफिट हो गया है। विधानसभा चुनाव में इस बार यहां से एक भी वामपंथी विधायक नहीं जीते। जिले की सात विधानसभा क्षेत्रों में पांच पर एनडीए और दो पर राजद ने जीत हासिल की है जिले की तीन सीटों पर भाजपा और एक एक सीट जदयू और लोजपा के हिस्से में आयी है। लगभग साठ बरसों से जिले की राजनीति में अहं भूमिका निभाने वाले वामपंथी दलों को जिले की जनता ने क्या नकार दिया है। इससे पूर्व 2015 के चुनाव में भी जिले से वामपंथी धारा के दलों के एक भी विधायक नहीं चुने गए थे ।

बेगूसराय में वामपंथियों के चुनाव जीतने का इतिहास आजादी के बाद हुए प्रथम आम चुनाव के बाद से ही है,जब 1956 में एक उपचुनाव में बेगूसराय से लाल सितारे का उदय हुआ और उत्तर भारत के हिंदी बेल्ट में पहले एम एलए के रूप में बेगूसराय विधानसभा क्षेत्र से कम्युनिस्ट नेता चंद्रशेखर सिंह विजयी रहे । लेकिन,1957 में उनकी हार हो गई। इसके बाद उन्होंने,1962 के बिहार विधानसभा चुनाव में तेघड़ा विधानसभा क्षेत्र से जीत दर्ज कर बेगूसराय में वामपंथ का झंडा गाड़ दिया। तब से पचास बरसों तक 2010 तक तेघड़ा से सीपीआई के विधायक ही लगातार चुनाते रहे। वर्ष 2010और 2015 में यहां से भाजपा और राजद के एमएलए चुने गए ।लेकिन,2020 में सीपीआई के रामरतन सिंह ने इस सीट पर फिर सीपीआई को जीत दिला कर वामपंथ के इस सीट को सुरक्षित कर लिया। वर्ष 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव में यहां से भाजपा के रजनीश कुमार ने सीपीआई के बरसों पुराने इस चुनावी किले को ध्वस्त कर भगवा लहराकर इतिहास रच दिया ।

इसी तरह जिले के बखरी में 1967 से ही वामपंथ के विधायक लगातार चुनाते रहे। पहली बार 43 बरसों बाद वर्ष 2000 में राजद ने इस सीट पर सीपीआई को शिकस्त देकर इस वामपंथी किले को कब्जे में ले लिया।लेकिन 2005 और 2020 में सीपीआई ने इस सीट पर फिर वापसी की। इस बार के विधानसभा चुनाव में लोजपा उम्मीदवार से सीपीआई को करारी हार मिली और बेगूसराय में तेघड़ा के बाद सीपीआई का सबसे मजबूत दुर्ग माना जानेवाला बखरी से सीपीआई की विदागरी हो गई।

इसी तरह वर्ष 1977 में बने मटिहानी विधानसभा क्षेत्र से पांच बार विधायक देनेवाले सीपीआई को वहां से भी वर्ष 2005 में बेदखली हो गई। इस चुनाव में महागठबंधन में राजद ने यह सीट जीती है। वामपंथ दलों ने समझौते में यह सीट राजद के लिए छोड़ी थी। राजद उम्मीदवार को इस सीट पर सफलता मिल गई।

बेगूसराय जिले के बछवाड़ा से चार बार विधायक जिताने वाली सीट पर भी सीपीआई के पूर्व विधायक को इस बार तीसरे पायदान पर ठहरना पड़ा और भाजपा ने कम्युनिस्ट कांग्रेस के संघर्ष में यह सीट आसानी से कब्जिया लिया। बेगूसराय सीट पर वर्ष 1990 और 1995 में विधायक देनेवाले वामपंथी पार्टियों का पिछले कई चुनावों से नामलेवा भी नहीं है। वर्ष 2000 से ही बेगूसराय विधानसभा सीट से वामपंथी दल बेदखल है। जिले के चेरियां बरियारपुर विधानसभा क्षेत्र से वर्ष 1980 में उसके विधायक चुने गए थे। लेकिन फिर दुबारा यहां है अपना प्रतिनिधि भेजने का मौका नहीं लगा। जिले के साहेबपुरकमाल विधानसभा क्षेत्र से वामपंथी कभी चुनाव नहीं जीत सके।

बेगूसराय संसदीय क्षेत्र से भी 1967 में और 1996 में तथा जिले के बलिया संसदीय क्षेत्र से वर्ष 1980,1989,1991 तथा 1996 में सीपीआई के उम्मीदवार लोकसभा चुनाव जीतते रहे। सीपीआई का जिले में लगभग 60 बरसों तक राजनीतिक वर्चस्व बना रहा। पिछले पच्चीस बरसों से सीपीआई और वामपंथियों का खूंटा यहां से उखड़ता गया और भाजपा तथा राजद जदयू जैसी पार्टियों का वर्चस्व बढ़ता गया।

वर्चस्व कायम रखने की रणनीतिक साझीदारी

राजकिशोर सिंह

उतार-चढ़ाव की राजनीति का पर्याय समझे जाने वाले बिहार में पिछले 35 वर्षों में सिर्फ दो ही नेताओं, लालू प्रसाद यादव और नीतीश कुमार का वर्चस्व कायम रहा है. दोनों एक ही समाजवादी विचारधारा से ऊपर उठे, करीबी सहयोगी भी रहे, कट्टर प्रतिद्वंदी भी रहे हैं. कभी उनकी राहें जुदा हुईं तो कभी साझा लक्ष्य को हासिल करने के लिए सारे गिले-शिकवे भुला दिए गये. उनके बीच मतभेद भी हुए, मनभेद भी, लेकिन दोनों ने कभी तल्ख, कभी नरम रिश्तों के बीच इसका ख्याल जरूर रखा कि जब भी कभी उन्हें फिर से गलबहियां करने का मौका मिलेगा, तो किसी को शर्मिंदगी का एहसास न हो सके, इसका ख्याल दोनों तरफ से बराबर रखने की भरपूर कोशिश की गई. हालिया वर्षों में लोकसभा और बिहार विधान सभा की चुनावी राजनीति का यही लब्बोलुआब रहा है. इस रणनीतिक साझीदारी को भाजपा नीत एनडीए गठबंधन ने ऐसा छौंक लगाया है कि बड़े भाई को आंसू तक नहीं निकल पा रहा है. मानों जैसे काठमार दिया हो. आखिरकार, जो 25 पर सिमट गए हैं.

सामाजिक जीवन में एक-दूसरे को पचास साल से अधिक से करीब से जानने वाले दोनों नेता इस विधानसभा चुनाव में फिर आमने-सामने रहे हैं, अपने राजनैतिक वर्चस्व और विरासत को बचाने की जद्दोजहद में. बीते नवंबर माह को दो चरणों में संपन्न बिहार विधानसभा चुनाव में दोनों पुराने प्रतिद्वंद्वियों की साख दांव पर लगी थी, लेकिन 14 नवंबर को चुनाव परिणामों की घोषणा होने के बाद ही पता चला कि इस बार बाजी किसने मारी है. भाजपा नीत एनडीए गठबंधन में शामिल नीतीश कुमार की पार्टी जदयू ने दूसरी बड़ी पार्टी बनकर उभरी है. नीतीश कुमार एक बार फिर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के 'नेता' हैं, तो लालू महागठबंधन की विचारधारा के ऐसे प्रतीक जिनकी सियासी ताकत के बल पर उनका हर सहयोगी दल चुनावी वैतरणी पार करना चाहता था. इसके बावजूद यह सब संभव नहीं हो पाया. वैसे चुनौती देने वाले नए खिलाड़ियों के बावजूद पिछले कई चुनावों की तरह इस बार भी बिहार में लड़ाई नीतीश कुमार बनाम लालू यादव की ही है. वैसे तो नीतीश कुमार जिस एनडीए गठबंधन में हैं, उसमें भाजपा सबसे बड़ा सहयोगी दल है. जिसका तुरुप का इक्का स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं, लेकिन प्रदेश की जंग की कमान अभी भी जनता दल यूनाइटेड के हाथ में ही है. नीतीश ने पिछले 20 साल में राजनैतिक कौशल और सोशल इंजीनियरिंग की बदौलत जीत का ऐसा फामूर्ला बनाया, जिसका विकल्प अब तक न भाजपा ढूंढ पाई है, न लालू प्रसाद को इसकी कोई काट मिल पाई है. हाल का चुनावी इतिहास इस बात की तस्दीक करता है कि नीतीश जिस गठबंधन में रहते हैं, चुनावी जीत उसी की होती है. बिहार की राजनीति में नीतीश का यही यूनिक सेलिंग पॉइंट (यूएसपी) है, जिसकी बदौलत वे चुनाव दर चुनाव जीत का परचम लहराते हैं. जबसे नीतीश बिहार की सत्ता में आए, यह परिपाटी-सी बन गई है.

भाजपा के सहयोग से नवंबर 2005 के विधानसभा चुनाव में जीत दर्ज करके मुख्यमंत्री की कुर्सी पर जबसे नीतीश कुमार बैठे, उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा है. जब 2010 में प्रदेश का अगला चुनाव हुआ तो उन्होंने प्रचंड बहुमत हासिल किया. हालांकि तीन साल के भीतर ही उनका अपने पुराने सहयोगी से मोहभंग हो गया, जब भाजपा की कमान लालकृष्ण आडवाणी की जगह गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी ने थाम ली. इसका खामियाजा नीतीश को 2014 के लोकसभा चुनावों में भरना पड़ा जब उनकी पार्टी के सांसदों की संख्या 20 से घटकर सिर्फ दो रह गई थी. लेकिन उस चुनाव परिणाम से नीतीश ने सबक सीखा कि अखाड़े में वर्चस्व बरकरार रखना है, तो जदयू को लालू या भाजपा में से किसी एक गठबंधन का हिस्सा बनना पड़ेगा. नीतीश ने 2015 के विधानसभा चुनाव में लालू के साथ गठबंधन किया और भाजपा को कड़ी शिकस्त देकर फिर से मुख्यमंत्री बने.

दरअसल नीतीश को लगता था कि अगर एनडीए का नेतृत्व भाजपा के 'हार्ड लाइनर' नरेन्द्र मोदी के हाथों

में चला जाएगा, तो बिहार के मुस्लिम मतदाता उनसे दूर चले जाएंगे और लालू यादव की सत्ता में वापसी आसान हो जाएगी. सो, उन्होंने अटल-आडवाणी युग में मोदी को बिहार के चुनाव में प्रचार के लिए नहीं भेजने का भाजपा आलाकमान से लगातार आग्रह किया था. बहरहाल, नीतीश ने यह रणनीति लालू के मजबूत माई (मुस्लिम यादव) के चुनावी किले में सेंध लगाने के लिए बनाई थी. बिहार में मुस्लिमों की जनसंख्या लगभग 19 और यादवों की 14 प्रतिशत रही है. इस वजह से उन्हें लगता था कि जब तक उस समीकरण को ध्वस्त नहीं किया जाएगा, बिहार में लालू की वापसी का 'खतरा' हमेशा बरकरार रहेगा. इसलिए उन्होंने मुस्लिम मतदाताओं को रिझाने के लिए कई अल्पसंख्यक कल्याण की योजनाएं चलाई. उस दौरान नीतीश ने जोर दिया कि उनकी पार्टी भाजपा से तीन प्रमुख मुद्दों, अयोध्या राम मंदिर निर्माण, समान नागरिक संहिता और अनुच्छेद 370 पर अलग राय रखती है.

इसी रणनीति के तहत जून 2010 में पटना में भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की मीटिंग के दौरान वरिष्ठ भाजपा नेताओं के सम्मान में दिए जाने वाले भोज को अंतिम समय में रद्द कर दिया क्योंकि भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने नरेन्द्र मोदी को उससे दूर रखने की उनकी मांग को ठुकरा दिया. नीतीश ने गुजरात से मोदी सरकार के बिहार बाढ़ पीड़ितों की राहत के लिए भेजी गई 5 करोड़ रुपये की राशि भी वापस कर दी थी. जाहिर है, नीतीश यह संदेश देना चाहते थे कि वे भाजपा के साथ भले ही गठबंधन में सरकार चला रहे हों लेकिन अल्पसंख्यकों के हित के लिए वे लालू से अधिक प्रतिबद्ध हैं. उनके प्रयासों का कुछ असर 2010 के विधानसभा चुनाव में दिखा, जब अल्पसंख्यकों के एक बड़े वर्ग ने उनका समर्थन किया. नीतीश की यह बड़ी सफलता थी कि उन्होंने लालू के 'बोट बैंक' कहे जाने वाले किले में सेंध लगा ली थी. नीतीश उसे और मजबूत करना चाहते थे क्योंकि अपनी पार्टी का जनाधार लालू यादव को चुनावी नुकसान पहुंचा कर बढ़ाना था. इसलिए जब मोदी को 2013 में एनडीए के प्रधानमंत्री उम्मीदवार के रूप में पेश करने की खबर आई, तो नीतीश ने भाजपा के साथ सत्रह वर्ष पुराना गठबंधन तोड़ दिया था.

साल 2005 में जब मुख्यमंत्री के रूप में लालू प्रसाद-राबड़ी देवी का 15 साल का कार्यकाल नीतीश ने खत्म किया तो लालू ने अपनी सारी ऊर्जा केंद्र की राजनीति में लगाई, और बिहार में नीतीश की रणनीतियों को विफल करने में कोई दिलचस्प नहीं दिखाई. वे नीतीश को महज भाजपा का मोहरा समझते रहे और उन्होंने अपनी लड़ाई भाजपा के कथित सांप्रदायिकता के मुद्दे के इर्दगिर्द रखा. इस कारण नीतीश को अपने विकास के एजेंडे को बढ़ाने के लिए मैदान खाली मिला. सहयोगी भाजपा ने भी नीतीश को बिहार के 'पुनर्निर्माण' करने में पूरा सहयोग दिया. लालू-राबडी कार्यकाल की गलतियों से सबक लेकर नीतीश ने मुख्यमंत्री बनने के बाद मुख्य रूप मे तीन मुद्दा, कानून-व्यवस्था को सुदृढ़ करना, भ्रष्टाचार को मिटाना और सांप्रदायिकता पर नकेल कसने पर ध्यान दिया. राजद के पंद्रह साल के कार्यकाल को लचर कानून-व्यवस्था के कारण 'जंगल राज' तक कहा गया. इसलिए जब नीतीश ने कानून-व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त करना शुरू किया. तो बिहार का बहुत बड़ा मतदाता वर्ग उनसे बहुत प्रभावित हुआ. भ्रष्टाचार और सांप्रदायिकता पर भी उन्होंने कोई समझौता नहीं किया. पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देकर, राजनैतिक संरक्षण प्राप्त बाहुबलियों के खिलाफ स्पीडी ट्रायल की व्यवस्था तय कर और शिक्षा-स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार कर सियासी जमीन मजबूत की.

नीतीश को यह पता था कि अगर उन्होंने अपने कार्यकाल में विकास की लंबी लकीर नहीं खींची, तो लालू जैसे जमीन से जुड़े राजनैतिक प्रतिद्वंद्वी को लंबे समय तक सत्ता से बाहर नहीं रखा जा सकता है. इसलिए उन्होंने बिहार के चहुंमुखी विकास के लिए दिन-रात काम किया, ताकि लालू की वापसी आसान न रहे. विडंबना यह हुई कि 2014 के लोकसभा चुनाव के बाद दोनों नेताओं को एक दूसरे की जरूरत हुई क्योंकि मोदी के नेतृत्व में भाजपा का जनाधार न सिर्फ देश में बल्कि बिहार में भी बढ़ने लगा था.

2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा गठबंधन की भारी जीत के बाद नीतीश और लालू दोनों के सामने राजनैतिक संकट मंडरा रहा था. लोकसभा चुनाव के बाद अपनी पार्टी की हार की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए नीतीश ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देकर महादलित नेता जीतन राम मांझी को उत्तराधिकारी बनाया लेकिन मांझी ने कमान संभालने के बाद इस धारणा को तोड़ दिया कि वे नीतीश के 'प्रॉक्सी' के रूप में काम करेंगे. नीतीश खेमे को यह भी शक हुआ कि मांझी भाजपा के साथ कोई 'सीक्रेट डील' कर चुके थे. ऐसी स्थिति में नीतीश के पास मांझी को हटाने के अलावा कोई चारा नहीं था. साथ ही नीतीश और लालू के पास कटुता भुलाकर एक साथ आने के अलावा शायद कोई दूसरा विकल्प नहीं बचा था. उनका गठबंधन प्रभावी था, जिसके कारण 2015 विधानसभा चुनाव में महागठबंधन को भारी जीत मिली. हालांकि यह गठबंधन ज्यादा दिन नहीं चला. दो वर्ष के भीतर नीतीश ने राजद से नाता तोड़ कर फिर से भाजपा के साथ सरकार बना ली.

जयप्रकाश नारायण के संपूर्ण क्रांति आंदोलन के दौरान लालू-नीतीश करीब आए और लालू के मुख्यमंत्री बनने तक दोनों के संबंध प्रगाढ़ रहे. सत्ता मिलने के बाद लालू की कार्यशैली से नाराज नीतीश 1993 में उनसे अलग हो गए और जॉर्ज फर्नांडीस के साथ समता पार्टी बनाकर 1995 के विधानसभा चुनाव में किस्मत आजमाई. उनकी पार्टी को मात्र सात सीटें मिली थी. एक साल बाद, आडवाणी की सलाह पर लालू के खिलाफ उन्होंने भाजपा से गठबंधन कर लिया. दरअसल 1990 में लालू यादव ने मुख्यमंत्री रहते हुए आडवाणी को रथ यात्रा के दौरान समस्तीपुर में गिरफ्तार करवाया था. इस कारण मुस्लिम मतदाताओं में उनकी लोकप्रियता बढ़ी, जो 1989 के भागलपुर दंगों के बाद कांग्रेस का विकल्प तलाश रहे थे. लालू को माई समीकरण मजबूत करने में मदद मिली जो उनका चुनावी ब्रह्मास्त्र साबित हुआ. भाजपा नब्बे के दशक में मुख्य विपक्षी दल के रूप में उभरी थी, लेकिन लालू को सत्ता से बाहर करने में उसकी कोशिश सफल नहीं हो रही थी. नीतीश के रूप में उन्हें ऐसा गैर-यादव ओबीसी नेता मिला जो लालू को चुनौती देने का माद्दा रखता था. इसलिए समता पार्टी से बड़ी पार्टी होने के बावजूद जब 2000 में राबड़ी देवी सरकार के बर्खास्त होने के बाद एनडीए गठबंधन की सरकार बनी, तो भाजपा ने सहर्ष नीतीश को मुख्यमंत्री बनाया. बहुमत के अभाव में सरकार सात दिन में गिर गई लेकिन भाजपा और नीतीश के लिए यह स्पष्ट हो गया कि राजद की सत्ता खत्म करने के लिए अभी और तैयारी की जरुरत है. फरवरी 2005 में त्रिशंकु विधानसभा बनने के बाद उसी साल नवंबर में फिर चुनाव हुए तो भाजपा ने पहली बार चुनाव से पहले नीतीश को गठबंधन के मुख्यमंत्री के चेहरा के रूप में पेश किया जिसके बाद भाजपा-जदयू को सरकार बनाने में सहायता मिली. विडंबना यह रहा है कि लालू राज के दौरान जिस लचर कानून-व्यवस्था और भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाकर नीतीश सत्ता में काबिज हुए, उन्हीं के साथ मिलकर उन्होंने 2015 में सरकार बनाई. यह बात और है कि भ्रष्टाचार के कथित मुद्दे पर ही नीतीश फिर से लालू से अलग भी हुए.

गौरतलब है कि 2015 की जीत के बाद लालू के छोटे बेटे तेजस्वी यादव उप मुख्यमंत्री बने जबकि उनके बड़े बेटे तेज प्रताप यादव को कैबिनेट मंत्री बनाया गया था. भाजपा से गठबंधन तोड़ने के बाद नीतीश ने ऐलान किया था कि वे एनडीए में वापस कभी नहीं जाएंगे लेकिन नए मंत्रिमंडल के गठन के बाद से ही वे राजद के साथ अपने रिश्ते में असहज दिखने लगे. उन्हें शिकायत मिलने लगी कि लालू अपने बेटों के मंत्रालयों सहित अपनी पार्टी को मिले सभी विभागों में दखलंदाजी कर रहे हैं. रही-सही कसर भाजपा नेता सुशील कुमार मोदी ने पूरी कर दी थी. उन्होंने तेजस्वी और तेज प्रताप सहित लालू परिवार के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों की झड़ी लगा दी थी. नीतीश ने तेजस्वी से आरोपों का जवाब देने को कहा था. उनके ऐसा न करने पर राजद के साथ गठबंधन तोड़ वे वापस भाजपा के पास चले गए. साल 2015 के चुनाव में राजद 80 सीट जीतकर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी थी. जदयू को सिर्फ 71 सीटें मिली थीं. इसके बावजूद लालू को नीतीश को मुख्यमंत्री स्वीकारना पड़ा क्योंकि चुनाव पूर्व उन्होंने उस पर मुहर लगा दी थी. जैसे जैसे दिन बीतने लगे, लालू गठबंधन के भीतर बड़े भाई की भूमिका में आने लगे, जिससे नीतीश असहज होने लगे. नीतीश का भाजपा के साथ सरकार चलाने का अनुभव बिलकुल अलग था. सुशील मोदी के उप-मुख्यमंत्री रहते नीतीश को ऐसा सामना नहीं करना पड़ा था. हालांकि भाजपा के साथ बाद के वर्षों में नीतीश के रिश्ते उतने मधुर नहीं रहे, जो 2013 के पहले थे. 2020 के विधानसभा चुनाव में उन्हें इसका कड़वा एहसास हुआ जब एनडीए के ही एक घटक दल, लोक जनशक्ति पार्टी के चिराग पासवान ने नीतीश के खिलाफ मुहीम खोल दी और जदयू के सभी उम्मीदवारों के खिलाफ अपने उम्मीदवार खड़े किए. नीतीश को लगा कि चिराग भाजपा के साथ किसी अंदरूनी समझौते के तहत यह कर रहे हैं, ताकि नीतीश को बिहार में कमजोर किया जा सके. वैसा हुआ भी. उस चुनाव में भाजपा 75 सीट के साथ बड़ी पार्टी के

रूप में उभरी जबकि जदयू को मात्र 43 सीट से संतोष करना पड़ा. चिराग की पार्टी के गठबंधन से बाहर अलग से चुनाव लड़ने के कारण जदयू को 36 सीटों का नुकसान हुआ था. उससे पहले 2019 के लोकसभा चुनाव के बाद बिहार में 16 सीट जीतने के बावजूद जदयू को केंद्र में सिर्फ एक मंत्री पद दिए जाने और अरुणाचल प्रदेश के छह जदयू विधायकों के भाजपा खेमे में चले जाने से भी नाराजगी बढ़ी. नीतीश इससे भी खुश नहीं थे कि 2020 चुनाव के बाद भाजपा ने सुशील मोदी की जगह अन्य भाजपा नेताओं को उप-मुख्यमंत्री का पद दिया था. उनकी भाजपा से दूरियां बढ़ीं जिसने कई अफवाहों को जन्म दिया कि वे शायद इस चुनाव के पहले फिर से लालू के साथ गठबंधन कर सकते हैं. हालांकि भाजपा के वरिष्ठ नेता अमित शाह ने शुरूआत में ही यह घोषणा कर सभी अटकलों पर विराम लगाया कि एनडीए वह चुनाव नीतीश के नेतृत्व में ही लड़ेगी.

पिछले दो विधानसभा चुनावों में राजद प्रदेश की सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी थी. इसी उम्मीद के साथ लालू गिरते स्वास्थ्य के बावजूद अपने तमाम अनुभवों के आधार पर चुनावी रणनीतियां बनाते रहे. हालांकि लालू परिवार की अंदरूनी कलह चुनाव से पहले सतह पर आ गई. पार्टी से निष्काषित होने के बाद उनके बड़े बेटे तेज प्रताप ने बगावत कर दी और कई चुनाव क्षेत्रों में राजद के खिलाफ अपने उम्मीदवार उतारे. हालांकि इस बार प्रशांत किशोर के जन सुराज पार्टी के 238 क्षेत्रों में चुनाव लड़ने से लड़ाई त्रिकोणीय हो गई. इससे दोनों प्रमुख गठबंधनों को नुकसान तो हुआ लेकिन उनकी पार्टी को एक सीट पर भी जीत हासिल नहीं हुई.

यह सच है कि 2014 के बाद से भारतीय राजनीति में नरेंद्र मोदी सबसे बड़ा चेहरा रहे हैं. 2025 में भी उपलब्धियों की बात करें तो उनका असर हर जगह दिखा. बिहार में नीतीश कुमार की जीत हो या दिल्ली में बीजेपी की वापसी, दोनों जगह मोदी फैक्टर निर्णायक रहा. लेकिन साल 2025 भारतीय राजनीति के लिए कई मायनों में यादगार रहा. कहीं सत्ता के समीकरण बदले, कहीं ऐसे चेहरे सामने आए जिनकी किसी ने कल्पना तक नहीं की थी, तो कहीं ऐसे फैसले हुए जिन्होंने सियासी गलियारों में महीनों तक चर्चा को हवा दी. इस पूरे घटनाक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की रणनीति कई जगह निर्णायक दिखी, लेकिन इस बार कहानी सिर्फ मोदी तक सीमित नहीं रही. बिहार से दिल्ली और संसद के गलियारों से तमिलनाडु की सियासत तक, पांच ऐसे नेता रहे जिनके नाम ने 2025 की राजनीति को परिभाषित किया. किसी को मोदी-शाह ने बड़ा सरप्राइज दिया, तो किसी का फैसला पूरे सिस्टम को हैरान कर गया.

बीजेपी अक्सर कहती है कि पार्टी में एक सामान्य कार्यकर्ता भी शीर्ष तक पहुंच सकता है. नितिन नवीन का उभार इस दावे को जमीन पर उतारता नजर आया. लंबे समय तक संगठन में काम करने वाले नितिन नवीन अचानक राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में आ गए. जिस तरह उन्हें बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई, उसने कई सीनियर नेताओं को भी चौंका दिया. धर्मेंद्र प्रधान, भूपेंद्र यादव और अनुराग ठाकुर जैसे नामों के बीच नितिन नवीन का आगे आना मोदी-शाह की उस रणनीति को दिखाता है, जिसमें भविष्य के नेताओं को समय से पहले तैयार किया जाता है. 2025 में नितिन नवीन बीजेपी के भीतर उभरते भरोसे का चेहरा बन गए.

नीतीश कुमार के लिए 2025 का विधानसभा चुनाव आसान नहीं था. सेहत, प्रशासन और अजीबो-गरीब बयानों को लेकर वे लगातार निशाने पर रहे. इसके बावजूद बिहार की 243 सीटों में से 202 सीटें एनडीए के खाते में जाना बड़ी उपलब्धि मानी गई. खास बात यह रही कि राष्ट्रीय जनता दल को सिर्फ 25 सीटों पर समेट दिया गया.

चुनाव से पहले जेडीयू के खत्म हो जाने की भविष्यवाणियां हो रही थीं, लेकिन नतीजों ने सबको गलत साबित कर दिया. नीतीश ने अपनी पार्टी को बीजेपी के लगभग बराबर खड़ा कर दिया और विरोधियों को कोई विकल्प नहीं बचा. 2025 में नीतीश कुमार ने एक बार फिर साबित किया कि अनुभव और धैर्य बिहार की राजनीति में अब भी सबसे बड़ा हथियार है.

इसी तरह दिल्ली की राजनीति में रेखा गुप्ता का उभार किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं रहा. पहली बार विधायक बनते ही मुख्यमंत्री बन जाना अपने आप में बड़ी बात है. हालांकि दिल्ली में ऐसा पहले भी हो चुका है, लेकिन रेखा गुप्ता इससे पहले कोई बड़ा नाम नहीं थीं. नगर निगम की पार्षद के तौर पर काम करने वाली रेखा गुप्ता को मुख्यमंत्री बनाना बीजेपी की उस रणनीति का हिस्सा दिखा, जिसमें नए और अपेक्षाकृत अनजान चेहरों पर भरोसा किया गया. मोहन यादव, भजनलाल शर्मा और विष्णुदेव साय की तरह रेखा गुप्ता भी 2025 में मोदी-शाह के सरप्राइज पैकेज का बड़ा उदाहरण बनीं. बिहार की राजनीति के बारे में एक बात मशहूर है कि यहां जो दिखता है, वो होता नहीं और जो होता है, उसे भांप पाना नामुमकिन है. राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ने कभी संसद में चुटकी लेते हुए कहा था कि "नीतीश कुमार के पेट में दांत हैं." आज बिहार की सत्ता के गलियारों में जो कुछ भी हो रहा है, वो लालू की उस पुरानी बात को सच साबित कर रहा है. विधानसभा चुनाव में प्रचंड जीत के बाद भले ही बीजेपी सबसे बड़ी ताकत बनकर उभरने का दावा कर रही हो, लेकिन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि बिहार की गद्दी पर 'चाणक्य' वही हैं. उन्होंने न केवल बीजेपी को ऐसे विभाग थमाए जहां सिर्फ चुनौतियां हैं, बल्कि चुपचाप तीन नए विभाग बनाकर सत्ता की असली चाबी अपने पास ही रख ली. इतना ही नहीं, सालों से पटना के '10 सर्कुलर रोड' बंगले में डटे लालू परिवार को भी वहां से बाहर का रास्ता दिखाकर नीतीश ने अपना पुराना 'बदला' चुन-चुनकर पूरा किया है.

मंत्रिमंडल के बंटवारे को लेकर जब बीजेपी और जदयू के बीच रस्साकशी चल रही थी, तब नीतीश कुमार ने अचानक तीन नए विभागों का गठन कर सबको चौंका दिया. बीजेपी को लगा था कि महत्वपूर्ण विभाग उनके खाते में आएंगे, लेकिन नीतीश ने 'सिविल विमानन' जैसा रसूखदार विभाग अपने पास रखा. उन्होंने शिक्षा मंत्री सुनील कुमार को 'उच्च शिक्षा' की अतिरिक्त जिम्मेदारी देकर शिक्षा जगत पर अपनी पकड़ बनाए रखी. बीजेपी के हाथ सिर्फ 'रोजगार व कौशल' विभाग लगा, जिसके जरिए युवाओं की नाराजगी का सीधा सामना अब बीजेपी को करना होगा. इस एक चाल से नीतीश ने संदेश दे दिया कि सरकार के रडार पर कौन से विभाग रहेंगे, यह वही तय करेंगे.

राजनीतिक जानकारों का मानना है कि नीतीश कुमार ने इस बार बहुत ही शातिर तरीके से उन विभागों को बीजेपी के पाले में डाल दिया है जो सीधे तौर पर जनता की शिकायतों से जुड़े हैं. स्वास्थ्य विभाग, राजस्व एवं भूमि सुधार जैसे विभागों में आए दिन अव्यवस्थाओं की खबरें आती रहती हैं. भूमि विवाद को लेकर जनता में भारी आक्रोश है और अब इसकी गाज सीधे बीजेपी के मंत्रियों पर गिरेगी. स्वास्थ्य विभाग की बदहाली की तस्वीरें भी अब भगवा पार्टी के लिए गले की फांस बन रही हैं. नीतीश जानते हैं कि अगर इन विभागों में विफलता मिली, तो ठीकरा बीजेपी पर फूटेगा, और सफलता मिली तो श्रेय उनकी सरकार को जाएगा. बीजेपी के नेता इस बात पर अपनी पीठ थपथपा रहे हैं कि 20 साल बाद उन्हें 'गृह विभाग' मिला है. लेकिन क्या वाकई गृह विभाग बीजेपी के पास है? प्रशासन के सूत्रों का कहना है कि गृह विभाग तो सम्राट चौधरी के पास चला गया, लेकिन नीतीश ने 'सामान्य प्रशासन' को अपने पास रखकर असली खेल कर दिया. सामान्य प्रशासन ही वो विभाग है जिसके पास आईएएस अधिकारियों की पोस्टिंग, ट्रांसफर, प्रमोशन और नई नौकरियों के सृजन का अधिकार होता है. यानी पुलिस तो बीजेपी की होगी, लेकिन पुलिस और प्रशासन को चलाने वाले अफसर नीतीश के आदेश मानेंगे. बिना सामान्य प्रशासन के गृह विभाग एक ऐसा ताला है जिसकी चाबी नीतीश कुमार ने अपनी जेब में रखी है.

नीतीश कुमार के शासन करने का अपना एक अलग स्टाइल है. वे अक्सर विभागों के सचिवों के जरिए सीधी पकड़ बनाए रखते हैं. पिछली सरकारों में भी बीजेपी के मंत्री शिकायत करते थे कि उनके सचिव सीधे मुख्यमंत्री को रिपोर्ट करते हैं. इस बार भी तस्वीर कुछ वैसी ही बनती दिख रही है. इसके अलावा, लालू यादव के लिए भी नवंबर का महीना किसी सदमे से कम नहीं रहा. राजद की सीटें 75 से घटकर महज 25 रह गईं और अब उन्हें अपना वो '10 सर्कुलर रोड' वाला किला भी खाली करना पड़ रहा है जो 20 साल से उनकी ताकत का प्रतीक था.

बहरहाल, 2025 की राजनीति ने यह साफ कर दिया कि भारतीय सियासत अब सिर्फ बड़े नामों तक सीमित नहीं है. कहीं रणनीति ने खेल पलटा, कहीं अनुभव काम आया और कहीं अचानक फैसलों ने सबको चौंका दिया. इन नेताओं ने मिलकर 2025 को ऐसा साल बना दिया, जिसे राजनीति के इतिहास में लंबे समय तक याद रखा जाएगा.

लोकल को भोकल बनाएगा शाहाबाद

धरोहर को सहेजने के साथ पर्यटन विकास का लिया गया संकल्प

अपने गौरवशाली ऐतिहासिक सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत को सहेजते हुए पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रोहतासगढ़ किला परिसर में पिछले 7 दिसंबर को 7वें शाहाबाद महोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें राजनेता, अधिकारी, न्यायाधीश, सहित समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महती भूमिका निभा रहे लोगों ने शिरकत की। शाहाबाद महोत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष अखिलेश कुमार के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम बिहार सरकार के मंत्री संतोष कुमार सुमन, बक्सर सांसद सुधाकर सिंह, वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी विकास वैभव, थल सेना के पूर्व उपाध्यक्ष जनरल एस के सिंह, रांची उच्च न्यायालय के न्यायाधीश रहे डॉ एस एन पाठक, पूर्व मंत्री सह जगदीशपुर विधायक श्रीभगवान कुशवाहा, पूर्व मंत्री सह चेनारी विधायक मुरारी प्रसाद गौतम, सासाराम विधायिका स्नेहलता कुशवाहा, डेहरी विधायक राजीव रंजन उर्फ सोनू सिंह, पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित भीम सिंह भावेश, बिहार पुलिस एसोसिएशन के अध्यक्ष मृत्युंजय कुमार सिंह आदि शामिल थे। दो दिवसीय चले शाहाबाद महोत्सव से पहले सासाराम, डेहरी सहित अन्य शहरों में 'शाहाबाद गौरव यात्रा' निकाला गया जिसमें विभिन्न विद्यालयों के छात्र छात्राओं के साथ समाज के बुद्धजीवी लोग शामिल हुए। वहीं महोत्सव के पूर्व संध्या पर 6 दिसंबर को बिहार झारखंड के सीमा पर सोन कोयल नदी के संगम स्थल स्थित दसाशीश महादेव स्थान पर सोन आरती का भव्य आयोजन किया गया। जिसके मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी विकास वैभव शामिल थे। अंतिम दिन के मुख्य समारोह में उपस्थित सभी गणमान्य लोगों ने संकल्प कि यहां के ऐतिहासिक सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत को सहेजते हुए पर्यटन के क्षेत्र में इस इलाके को एक नई पहचान दिलाई जाएगी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शाहाबाद महोत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष अखिलेश कुमार ने कहा कि यहां पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं और इसके लिए आधारभूत संरचना विकसित कर जहां एक तरफ स्थानीय लोगों के लिए

रोजगार का दरवाजा खोला जाएगा वहीं देश दुनिया से आने वाले लोग हमारे गौरवशाली ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत से भी रुबरु होंगे।इस अवसर पर ऐतिहासिक रोहतासगढ़ के प्राचीर से राजनीतिक, प्रशासनिक, न्यायिक, पत्रकारिता, साहित्यिक आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले लोगों ने शाहाबाद महोत्सव आयोजन समिति द्वारा पिछले छः वर्षों से चलाए जा रहे अभियान की प्रशंसा करते हुए इसके उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जो प्रतिबद्धता जताई। और कहा कि अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विरासत और धरोहर सहेजना हर जागरूक नागरिक का नैतिक दायित्व बनता है और यह अच्छी बात है कि आयोजन समिति उस दायित्व का बोध कराते हुए इसके प्रति लोगों में एक नई चेतना जागृत करने का सफल प्रयास कर रही है।

कार्यक्रम में शामिल लोकसभा और विधानसभा के सदस्यों ने कहा कि शाहाबाद महोत्सव में पर्यटन को बढ़ावा देने का संकल्प लिया गया और आने वाले दिनों में इसके सकारात्मक परिणाम भी सामने आएंगे। वक्ताओं ने कहा कि पर्यटकों के आने जहां एक तरफ स्थानीय लोगों की आमदनी में इजाफा होगा वहीं दूसरी तरफ देश दुनिया के लोग यहां के कला संस्कृति से भी रूबरू होंगे। महोत्सव में यहां के परम्परागत नृत्य संगीत जैसे गोंड नाच, धोबिया धोबिनिया का नाच, शिवनारायणी गीत आदि की प्रस्तुति की गई। वहीं दूसरी तरफ यहां के महापुरुषों के साथ प्रमुख ऐतिहासिक, धार्मिक तथा प्राकृतिक सौंदर्य स्थलों का तैल्य चित्र प्रदर्शनी लगाई गई। साथ हीं चेनारी के गुड़ का लड्डू, कोआथ का बेलग्रामी, बरांव का सिंघाड़ा, बेतरी का चावल जैसे अपना विशिष्ट स्वाद के लिए अलग पहचान रखने वाले खाद्य सामग्रियों की भी प्रदर्शनी लगाई गई थी। समारोह के के दौरान शिक्षा और समाज सुधार के बेहतर कार्य करने वाले पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित भीम सिंह भावेश जी को 'महर्षि विश्वामित्र सम्मान', नृत्य संगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए मरणोपरांत बिजली रानी को 'बिस्मिलाह खां सम्मान', पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए उजाला दैनिक के संपादक तथा कौमी तंजीम के यूपी हेड परवेज आलम को 'स्वामी भवानी दयाल संन्यासी', देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीद रवि रंजन को 'ज्योति प्रकाश निराला सम्मान', और खेल के क्षेत्र उल्लेखनीय योगदान के लिए स्वर्ण पदक विजेता शेखर चौरसिया को वशिष्ठ नारायण सिंह सम्मान से सम्मानित किया गया।

रोहतासगढ़ किला परिसर में आयोजित कार्यक्रम में बिहार के अलावा झारखंड, दिल्ली, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों से भी लोग शामिल हुए, 12 किलोमीटर दुर्गम मार्ग से परेशानी जरूर हुई लेकिन अधिकांश लोग पहली बार इस जब इस विरासत से रुबरु हुए तो उन्हें अपने मातृभूमि के इस धरोहर को देखकर काफी गर्व महसूस करते हुए देखे गए।

बेगूसराय जिले के मटिहानी से लालटेन का जल उठना एक करिश्मा ही है

महेश भारती

बिहार में विधानसभा के चुनावी रिजल्ट ने सबको चौंका दिया है। बिहार में एनडीए के पक्ष में सुनामी के बीच बेगूसराय जिले के मटिहानी से लालटेन का जल उठना एक करिश्मा ही है । मटिहानी से राजद उम्मीदवार नरेंद्र कुमार सिंह बोगो की जीत लालटेन की नहीं , बल्कि बोगो सिंह के व्यक्तित्व की जीत मानी जा रही है। एक मायने में कह सकते हैं कि यह उनकी व्यक्तिगत जीत है। मटि हानी क्षेत्र से पांचवें बार विधायक बने बोगो सिंह पिछले 25 साल से बेगूसराय की राजनीति के चर्चित सखशियत रहे हैं। बाहुबल और धनबल से भरपूर बोगो सिह जिन्होंने मटिहानी में कांग्रेस कम्युनिस्ट पार्टी के संघर्ष के बीच अपने को स्थापित किया।

आखिर बोगो सिंह में क्या खासियत है जो उन्हें इस जिले की राजनीति में खास बनाता है। कल दिल्ली से एक फेसबुक फ्रेंड ने यह सवाल मुझसे किया था।

बोगो बाबू से मैं पिछले सहस्त्राब्दी के समाप्ति के दिन यानि 31 दिसम्बर 1999 को पहली बार मिला था। तब वे बेगूसराय में कम चर्चित थे और मैं भी उनका नाम नहीं जानता था। वह मिलना मेरे जैसे लोग के लिए

विशेष अनुभव था। तब बोगो बाबू राजनीति में सक्रिय नहीं आए थे, लेकिन समाजसेवी बनने की तरफ प्रवृत हो चुके थे। । राजनीति में आने की तैयारी कर चुके थे। उनका ससुराल मेरे इलाके में था और उनके ससुराल पक्ष के एक मेरे परिचित उनसे मिलाने मुझे वहां ले गए थे। बोगो बाबू पहले सीपीआई के हमदर्द थे और उनके जनसंगठनों में सक्रिय कार्यकर्ता भी रहे थे। उस समय बेगूसराय मने बिहार का मास्को और लेनिनग्राड माना जाता था। आज से 25 साल पहले उन्होंने एक मुलाकात में बताया था कि

मैंने कम्युनिस्ट पार्टी को लाखों चंदा दिया। जब काम लगता है चंदा ले जाते हैं। अब राजनीति में उतरूंगा और भाजपा मेरी पहली पसंद है। मेरी बातचीत भाजपा के नेतृत्व से चल रही है और मेरी इच्छा मटिहानी से विधायक बनना है और इसके लिए हमें कम्युनिस्ट पार्टी से ही संघर्ष करना होगा। इसके लिए भाजपा मुफीद पार्टी है। ऐसे भी सीपीआई से मेरा सारा परिवार जुड़ा रहा है।

बोगो बाबू के राजनीति के पांव तब से अभी तक नहीं रूके हैं।

ठेकेदार से नेता बनने की कथा के अगले चरण में वे वर्ष 2001 में हुए जिला परिषद के चुनाव में जीत

गए। उन्होंने तब कहा था जिला पार्षद बन गए ,अब एम एलए भी बनकर दिखा दूंगा। वर्ष 2003 में वे स्थानीय निकाय के विधानपरिषद सदस्य के लिए बेगूसराय खगड़िया क्षेत्र से उम्मीदवार बन गए। लेकिन सफलता नहीं मिली । इसके बाद वर्ष 2005 में हुए विधानसभा चुनाव में वे निर्दलीय उतर गए और सीपीआई भाजपा जदयू गठबंधन के उम्मीदवार को परास्त कर निर्दलीय विधायक बन बैठे। उन्होंने सीपीआई से तीन बार के विधायक रहे राजेंद्र राजन और दो बार के विधायक रहे प्रमोद कुमार शर्मा को परास्त कर दिया। उस चुनाव में पार्टी छोड़कर या अपने अपने पार्टी से विमुख होकर मतदाताओं ने उन्हें निर्दलीय वोट दिया था। वे 2009 में बेगूसराय संसदीय क्षेत्र से लोकसभा का चुनाव भी निर्दलीय लड़े, लेकिन जीत नहीं पाए।

वर्ष 2010 तथा 2015 में वे जदयू के टिकट पर लगातार विधायक बने तथा 2005 से 2020 तक लगातार विधायक चुनाते रहे । वर्ष 2020 के चुनाव में एक त्रिकोणीय मुकाबले में उन्हें शिकस्त लोजपा उम्मीदवार से मिली। लेकिन, विधानसभा चुनाव हारने के बावजूद वे समाजसेवा में लगे रहे। वे बाढ़ राहत से लेकर मटिहानी क्षेत्र की जनता के साथ सरोकार रखने में भी सफल रहे। वर्ष 2025 के विधानसभा चुनाव के पूर्व ही उन्होंने राष्ट्रीय जनता दल का दामन थाम लिया और टिकट भी प्राप्त कर लिया। उन्हें महागठबंधन में समर्थन देने के सवाल पर सीपीआई और कांग्रेस आई में अंदरूनी हलचल तेज रही। लेकिन मटिहानी में बोगो बाबू ने जब राज्य भर में राजद की विधानसभा चुनाव में भद्द पिट गई तो भी जीत का परचम अपने नाम कर सबको चौकाया ही नहीं अपने राजनीतिक वजूद को भी प्रकट किया। अपने अनोखे चुनाव प्रचार में मस्जिद में नमाज पढ़कर चर्चा में भी तथा विरोधियों के निशाने पर भी रहे।

अपने लोग मिलनू स्वभाव और बाहुबल के अनोखे अंदाज ने उन्हें मटिहानी क्षेत्र ही नहीं बेगूसराय जिले में इस बार खास बना दिया है। पांचवे बार मटिहानी जैसे क्षेत्र से विधायक चुनाना,अपने को मटिहानी का लाल कहने में गौरवान्वित बोगो सिंह मजाक और मिलनसार हंसाने अंदाज में अपनी बात रख लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। अपने बाहुबल पर राजनीति में स्थापित होने वाले बोगो सिह बेगूसराय के चर्चित राजनीतिक सख्स हैं तो इस चुनाव में मटिहानी

जैसे सबसे अधिक राजद विरोधी मतवाले भूमिहार बाहुल्य क्षेत्र से चुनाव जीतना एक तरह की उनकी व्यक्तिगत गरिमा और पहचान कुछ जीत ही कही जा सकती है।

राम कृपाली सिंह ! कृपाली चाचा ! कृपाली बाबा !

आज बेगूसराय से लेकर पूरे बिहार-झारखंड और दिल्ली तक अगर कोई एक नाम सबसे अधिक आदर और सम्मान के साथ लिया जा रहा है, तो वह है- "राम"दीरी गांव के "राम"नगर टोला निवासी "राम" कृपाली सिंह जी।

एक अजब संयोग...

गांवः- राम-दीरी

टोलाः- राम-नगर

नामः- राम-कृपाली बाबू

...और पुत्रद्वय ने भी अपने पूज्य पिता की श्रद्धांजलि सभा में खुद से हनुमान चालीसा का पाठ कर "राम"मय बना दिया।

गाय-भैंस-बैल और खेती-किसानी से जीवन चलाने वाले एक साधारण किसान परिवार से निकलकर भारत के चंद शीर्ष व्यवसायियों में स्थान बनाना कोई सामान्य उपलब्धि नहीं है। यह असाधारण संघर्ष, दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास से भरी शून्य से शिखर तक की जीवन-यात्रा है। जैसा कि विलियम अर्नेस्ट हेनली की कविता "Invictus" में कहा गया हैः-

"It matters not how strait the gate,
How charged with punishments the scroll,
I am the master of my fate, I am the captain of my soul."

(यह मायने नहीं रखता कि द्वार कितना संकीर्ण है,
सजा से कितना भरा हुआ स्क्रॉल है,
मैं अपने भाग्य का स्वामी हूं,
मैं अपनी आत्मा का कप्तान हूं।)

यह पंक्तियां रामकृपाली बाबू के जीवन की तरह ही अटूट इच्छाशक्ति को दर्शाती हैं, जहां हर बाधा के बावजूद व्यक्ति अपने भाग्य का नियंता बनता है।

रामकृपाली बाबू का व्यक्तित्व बनावटी नहीं था। सादगी में आत्मविश्वास, व्यवहार में स्पष्टता और बोलचाल में बेगूसराय की मिट्टी की खुशबू...यही अंततक उनके अंतःकरण में रहा और वह उनकी पहचान थी। उनकी कहानी उन लाखों किसानों और साधारण लोगों की कहानी है, जिन्हें समाज अक्सर समुचित सम्मान नहीं देता, लेकिन जो अपने पुरुषार्थ से इतिहास रचते हैं।

जिस दौर में उम्र के पांचवें दशक में पहुंचने से पहले अधिकांश लोग रुक जाते थे, तब लगभग चालीस वर्ष की आयु में वे गांव से बाहर निकले-सीखने, कमाने और कुछ कर दिखाने के संकल्प के साथ। खेती-किसानी से जुड़े परिवार के इस व्यक्ति के लिए यह निर्णय आसान नहीं रहा होगा, लेकिन इसी साहस ने उन्हें शून्य से शिखर तक ले जाने में अहम भूमिका निभाई। यहां प्रसिद्ध कवि दुष्यंत कुमार की प्रसिद्ध कविता की ये पंक्तियां सटीक बैठती हैंः

"हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।"

ये शब्द उस गहन पीड़ा और संघर्ष को व्यक्त करते हैं जो रामकृपाली सिंह जी ने सहा, और कैसे उन्होंने अपनी दर्द की पहाड़ी को पिघलाकर परिवर्तन की गंगा बहाई...बिना रुके, बिना थके।

पिछले कई दिनों से, बिहार से लेकर दिल्ली तक-सत्ता और विपक्ष, व्यापारी और पदाधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता और बुद्धिजीवी-हर कोई उन्हें स्मरण कर रहा है। यह केवल उनके धन का सम्मान नहीं, बल्कि उस जीवन-यात्रा का भी सम्मान है, जिसे उन्होंने एक सामान्य किसान परिवार से चलकर असाधारण बनाकर तय किया।

उनके श्राद्धकर्म और सामाजिक आयोजनों में दिखी उदारता कोई कोरा प्रदर्शन नहीं था। स्वर्ण अंगूठियां, दीवान-पलंग, गायों का बथान और दिल खोलकर दान- यह सब उस संतोष और संवेदना का प्रमाण था, जो संघर्ष से उपजती है और हजारों करोड़ का स्वामी बनकर भी व्यक्ति को अपनी जड़ों से जोड़े रखती है।

उनके दोनो पुत्रों ने भोज-भात की सामाजिक सीमाएं तोड़ दीं।जहां हर जाति, हर वर्ग, हर व्यक्ति सम्मानित अतिथि था। यह केवल भोज नहीं, बल्कि समरसता, संस्कार और सामाजिक एकता का सशक्त संदेश भी था-एक ऐसा संदेश जो आज के विभाजित समाज में और भी प्रासंगिक लगता है।

रामकृपाली सिंह ने जिस शान से कमाया, उसी शान से समाज को लौटाने का प्रयास किया। मंदिर, अस्पताल, एंबुलेंस और अनेक प्रत्यक्ष व परोक्ष रुप से जन-सरोकार के कार्य किए।

वे धनवान होने के साथ-साथ एक जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक भी थे।उनका शून्य से शिखर का संघर्ष आसान तो बिल्कुल नहीं रहा होगा, वैसी व्यस्तता के बीच उनके पास समय का कितना अभाव रहा होगा, यह आसानी से समझा जा सकता है। उनकी कंपनी आरकेएस कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड (आरकेएससीपीएल), जिसकी स्थापना 1971 में हुई, आज 50 वर्षों से अधिक की विशेषज्ञता के साथ बहुमंजिला इमारतें, अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम, सड़कें, सिंचाई, खनन और बिजली परियोजनाओं में अपनी छाप छोड़ रही है। कंपनी की मिशन वाक्य-'बिना समझौते के सर्वश्रेष्ठ हासिल करना और उद्यमशील प्रयासों से सपनों को साकार करना'-रामकृपाली बाबू के जीवन दर्शन को प्रतिबिंबित करता है। कंपनी ने 200 से अधिक परियोजनाएं पूरी की हैं, 35 से ज्यादा संतुष्ट क्लाइंट्स को सेवा दी है, और हाल ही में बेगूसराय सदर अस्पताल में 10-बेड वाले आईसीयू वार्ड के साथ दो वेंटिलेटर और बेड इत्यादि दान कर स्वास्थ्य सेवा में योगदान दिया है। क्लाइंट्स की प्रशंसा में प्रतिष्ठित विशाल कंपनी एनबीसीसी ने कहा है कि, "आरकेएससीपीएल कंस्ट्रक्शन हमारे साथ काम करने वाले सबसे बेहतरीन जनरल कांट्रेक्टर्स में से एक है... असाधारण गुणवत्ता वाली परियोजना समय पर और बजट के अंदर पूरी की।" इसी तरह, आरआईटीईएस कंपनी ने टिप्पणी की, "आपके कठिन परिश्रम के लिए धन्यवाद... सब कुछ इतनी अच्छी तरह से एक साथ आया।" कंपनी ने 20,000 गरीब परिवारों को परियोजनाओं में रोजगार देकर उनकी आजीविका सुनिश्चित की है, जो रामकृपाली बाबू की सामाजिक प्रतिबद्धता का जीवंत प्रमाण है। 2025 में कंपनी का राजस्व लगभग 2,600 करोड़ रुपये रहा, जो इसके विस्तार और विश्वसनीयता को दर्शाता है।

ऐसे में मेरा मानना है कि वे वास्तविक रूप में समाज के लिए जितना करने का सोच रहे होंगे, अनवरत संघर्ष और शिखर के शीर्ष पर बेगूसराय, बिहार तथा आरकेएस कंस्ट्रक्शन को ले जाने की कामना ने उन्हें उसके लिए पर्याप्त समय ही नहीं दिया, और वानप्रस्थ की उम्र में वह हम सबको छोड़कर इहलोक से विदा हो गए। ऐसे में उनके अधूरे सपनों और सामाजिक सरोकारों को पूरा करने की जिम्मेदारी उनके पुत्र श्री सुधीर जी और श्री रंजन जी पर आन पड़ी है। निश्चित तौर पर उनके दोनों पुत्र उनके सामाजिक सरोकारों और संस्कारों को आगे बढ़ाने तथा उनकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए कमर कस चुके हैं। तब ही तो दोनों भाई सपरिवार पिछले लगभग चार सप्ताह से अपने आदरणीय पिता की सेवा और सम्मान की खातिर लगातार दिन-रात एक कर दिए हैं...एक ऐसा समर्पण जो आंसू छलका देता है।

राष्ट्रकवि दिनकर की पंक्तियां उनके जीवन पर पूर्णतः सटीक बैठती हैं—

ह्णअपना बल-तेज जगाता है,
सम्मान जगत से पाता है।

गंगा किनारे बसे रामदीरी गांव से निकलकर देश के शीर्ष धनवानों में स्थान पाने वाले रामकृपाली सिंह, बेगूसराय और बिहार के लिए किसी अंबानी या अडानी से कम प्रेरणास्त्रोत नहीं हैं।

वे केवल एक उद्योगपति नहीं थे-वे संभावना, संघर्ष और संस्कार का नाम थे।

ऐसे महामानव को शत-शत नमन।

बाल विवाह मुक्त भारत का चलेगा 100 दिन का अभियान योजना का हुआ शुभारंभ

प्रधान जिला जज, जिलाधिकारीएवं एसपी ने दीप प्रज्वलित कर किया कार्यक्रम का शुभारंभ

राजेश पंजिकार ब्यूरो चीफ

बाल विवाह मुक्त भारत विषय पर चलाये जा रहे 100 दिवसीय जागरूकता अभियान के तहत जिला समाहरणालय, बांका के सभागार में पारा विधिक स्वयंसेवकों एवं आंगनबाड़ी सेविकाओं की संयुक्त बैठक आयोजित की गई थी कइस बैठक के मुख्य अतिथि प्रधान जिला जज श्री सत्यभूषण आर्य, जिला पदाधिकारी श्री नवदीप शुक्ला, पुलिस अधीक्षक श्री उपेंद्रनाथ वर्मा, सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकार श्री राजेश कुमार सिंह, सिविल सर्जन, बांका एवं डीपीओ आईसीडीएस श्रीमती रेणु कुमारी उपस्थित थे ककार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलन कर प्रधान जिला जज व जिला पदाधिकारी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया कइस कार्यक्रम में प्रधान जिला जज महोदय द्वारा सभा को संबोधित करते हुए कहा गया कि यह अभियान बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि खेलने कूदने के उम्र में बच्चियों को ब्याह दिया जाता है जो कि उनके भविष्य एवं उनके बचपने से जुड़ा हुआ मुद्दा है, इसलिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण और संजीदा मसला हो जाता है क पारा विधिक स्वयंसेवक एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के माध्यम से पूरे जिले तक पहुंच स्थापित कर बाल विवाह के उन्मूलन का यह संदेश प्रसारित किया जा सकता है कउन्होंने बाल विवाह को एक सामाजिक कुरीती मानते हुए उसके संपूर्ण उन्मूलन की बात कही कप्रधान जिला जज ने कहा की छोटी बच्चियों को कम उम्र में

दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते जिला प्रधान जजए डीएम, एसपी एवं सिविल सर्जन बांका।

उनके माता-पिता द्वारा जबरन शादी कर दी जाती है जिसके पीछे कारण अनेक हो सकते हैं परंतु यह सर्वथा अनुचित है तथा इस पर पूरी तरह से रोक लगाई जानी चाहिए क इसके लिए उन्होंने बैठक में उपस्थित आंगनबाड़ी कार्यकताओं एवं पारा विधिक स्वयंसेवक को इस प्रकार के किसी भी कृत्य की जानकारी प्रशासन से साझा करने को कहा कइस कार्यक्रम का आयोजन जिला विधिक सेवा प्राधिकार, बांका की ओर से किया गया था जिसमें संजय कुमार, जिला परियोजना प्रबंधक, महिला एवं बाल विकास निगम, बांका की भी सहभागिता रही कजिला विधिक सेवा प्राधिकार बांका की ओर से कृष्ण कुमार पाण्डेय एवं संजय कुमार सिंह तथा जिला हब फॉर एंपावरमेंट ऑफ वूमेन, बांका की ओर से राज अंकुश शर्मा एवं शेखर कुमार आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में उपस्थित जिले के आंगनबाड़ी सेविका, सहायिका एवं जीविका दीदी।

प्राइवेट स्कूल चिल्ड्रनस वेलफेयर एसोसिएशन का 14 राष्ट्रीय अधिवेशन चेन्नई में संपन्न

भीष्म नारायण आइडियल होली मिशन आवासीय विद्यालय कटोरिया के डायरेक्टर को मिला सम्मान सम्मान

दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथिगण

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

भीष्म नारायण

बांका। चेन्नई में होटल होलीडे इन में आयोजित प्राइवेट स्कूल एंड चिल्ड्रन'एस वेलफेयर एसोसिएशन के 14 नेशनल कांफ्रेंस से सम्मानित होकर बांका जिला की कटोरिया प्रखंड से आइडियल होली मिशन आवासीय विद्यालय कटोरिया के डायरेक्टर एवं प्राइवेट स्कूल एस एवं चिल्ड्रंस वेलफेयर एसोसिएशन बांका के उप सचिव भीष्म नारायण , आवासीय मार्शल अकादमी केसर से प्रणव कुमार राज एवं एस आर पब्लिक स्कूल बरसादाबाद , शंभूगंज के राहुल कुमार को देश के विभिन्न राज्यों से आए लगभग 200 विद्यालय के निदेशकके समक्ष उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करने तथा बच्चों के प्रति विशेष ध्यान रखने एवं अभिभावकों से संपर्क में रहकर पढ़ाई की समुचित व्यवस्था को स्वीकृत बनाने के लिए हरदम प्रयासरत रहने के कारण फिल्म स्टार राहुल राय एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष सैयद श्यामल अहमद के द्वारा सम्मानित की गई।

कार्यक्रम में सम्मानित होते भीष्म नारायण (डायरेक्टर होली मिशल आवासीय विद्यालय कटोरिया)

डॉ. प्रभा रानी प्रसाद को मिला प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत राज्य में पहला स्थान

स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी ने डॉ प्रभा रानी को प्रशस्ति पत्र एवं अंग वस्त्र देकर किया सम्मानित

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

गोड्डा-कहते हैं कि प्रतिभा किसी के मोहताज नहीं होती। सच्ची लगन और क्षमता कुछ कर दिखाने की चाह उन्हें सफल होने से कोई नहीं रोक सकता ।यह कथन को चरितार्थ किया है. गोड्डा जिले के प्रसिद्ध स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ प्रभारानी प्रसाद ने जिन्हें झारखंड सरकार की ओर से प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत पूरे झारखंड में सबसे अधिक गर्भवती महिलाओं को सुरक्षित स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करने के हेतु झारखंड सरकार के स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी के द्वारा प्रशस्ति पत्र मोमेंटो एवं श मोमेंटो एवं अंग वस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया ।डॉ प्रभारानी प्रसाद ने प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत जहां एक दिन में 323 मरीजों को देखने का कृतिमान स्थापित किया था वही 6 माह में इन्होंने अपने स्वास्थ्य केंद्र में 1429 गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य कीजांच कर पूरे राज्य में पहला स्थान प्राप्त किया। यह आंकड़ा पूरे राज्य भर में अब्बल है ।जिसके कारण उन्हें राज्य का पहला पुरस्कार प्राप्त हुआ ।वर्तमान समय में डॉ प्रभारानी दुमका जिले के सरैयाहाट प्रखंड मुख्यालय स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी के रूप में पदस्थापित हैं ।डॉ प्रभा रानी की चिकित्सा यात्रा वर्ष 1991 में गोड्डा जिला से शुरू हुई थी। जहां जिला मुख्य मुख्यालय के सदर अस्पताल गोड्डा में बतौर महिला एवं प्रसुति रोग विशेषज्ञ के रूप में लंबी अवधि तक अपनी सेवा देने वाली प्रभारानी प्रसाद करीब 1 वर्ष तक गोड्डा सदर अस्पताल के उपाधीक्षक के रूप में भी प्रस्थापित रही थी ।अपनी इस उपलब्धि के विषय में चर्चित बिहार को बताया कि चिकित्सक के रूप में कार्य करने में जितनी संतुष्टि होती है । उतनी प्रशासनिक पद पर रहने से नहीं होती लिहाजा उन्होंने कहा कि जब पेशेंट की कुशलता पूर्वक इलाज किया जाता है और उन्हें सफलता प्राप्त होती है तो काफी खुशी मिलती है। बहुआयामी प्रतिभा की धनी डॉ प्रभारानी प्रसाद की छवि सिर्फ एक चिकित्सक के रूप में ही नहीं है बल्कि संवेदना से भरपूर इंसान के रूप में भी रही है ,चिकित्सा पेशा की व्यस्तता के बावजूद डॉ प्रभारानी प्रसाद खेलकूद तथा धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में भी सक्रीयता पूर्वक भागीदारी निभा रही है ।महिला चिकित्सक के साथ -साथ हृदय में एक कवि की भी संवेदना भरी है। एक उत्कृष्ट कवित्री भी के रूप में भी डॉक्टर प्रभार रानी प्रसाद की गरिमा जनमानस में व्याप्त है। चर्चित बिहार परिवार इस अवसर पर उन्हें कोटि-कोटि बधाई के साथ- साथ शुभकामनाएं प्रदान करती है।

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथिगणा

मेरी चिकित्सीय यात्रा वर्ष 1991 में गोड्डा जिला से शुरू हुई थी.जिला मुख्यालय के सदर अस्पताल गोड्डा में अस्पताल उपाधीक्षक के पद पर पदस्थापित रही, लेकिन मुझे चिकित्सक के रूप में कार्य करने में जितनी संतुष्टि हुई है उतनी प्रशासनिक पदों पर रहने से नहीं होती, क्योंकि जब कठिन से कठिन मरीज को कुशलतापूर्वक उपचार के बाद सकुशल उन्हें घर वापस भेजा जाता है, तो एक आत्मीय खुशी मिलती है।

डॉ. प्रभा रानी प्रसाद
प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र
सरैयाहाट, दुमका

बांका में सरकारी बस सेवा होगी शूरू परिवहन मंत्री ने किया आस्वस्त

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

जदयू के राजनीतिक सलाहकार समिति के सदस्य ओंकार यादव ने परिवहन मंत्री को सौप मांग पत्र

बांका जिला मुख्यालय से जिले के विभिन्न शहरों के लिए सरकारी बस सेवा शुरू होगी ।परिवहन मंत्री श्रवण कुमार ने इसके लिए आस्वस्त किया ।एक अनोखी पहल के तहत जदयू के राजनीतिक सलाहकार समिति के सदस्य ओंकार यादव ने पर्यटन को बढ़ावा देने और आम यात्रियों की सुविधा को लेकर परिवहन मंत्री श्रवण कुमार से सरकारी बस सेवा शुरू करने की मांग की. उन्होंने मंगलवार को परिवहन मंत्री से औपचारिक मुलाकात कर एक मांग पत्र सोंपा ओंकार यादव ने जनहित का हवाला देते हुए, विश्व प्रसिद्ध सुल्तानगंज देवघर मार्ग पर सरकारी बसों के परिचालन की आवश्यकता बताई। उन्होंने बांका मुख्यालय से चंदन कटोरिया होते हुए देवघर तथा भागलपुर से बाराहाट बौंसी हंसडीहा होते हुए ,देवघर तक सीएनजी आधारित सरकारी बसें चलाने की मांग की। उनका कहना था कि इन मागों पर प्रतिदिन बड़ी संख्या में प्रतिदिन श्रद्धालु पर्यटक एवं स्थानीय लोग यात्रा करते हैं। लेकिन नियमित और सुरक्षित परिवहन सुविधा का अभाव रहने के कारण उन्हें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है ।उन्होंने कहा कि सरकारी बसों के परिचालन से श्रद्धालुओं और यात्रियों को सुलभ सुरक्षित और किफायती यात्रा सुविधा मिलेगी वहीं दूसरी ओर क्षेत्रीय पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। इससे स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर भी प्राप्त होंगे। परिवहन मंत्री श्रवण कुमार ने मांग पत्र को स्वीकार करते हुए इसे गंभीरता से लेते हुए उचित पहल का आश्वासन दिया।

बांका जिले में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए परिवहन मंत्री श्रवण कुमार को मांग पत्र सौंपते हुए, उनसे विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला क्षेत्र सुल्तानगंज से देवघर मार्ग पर तथा बांका जिला मुख्यालय से चांदन, कटोरिया ,होते हुए देवघर तथा भागलपुर से बाराहाट बौंसी हंसडीहा होते हुए देवघर तक सीएनजी आधारित सरकारी बसें चलाने की मांग किया।उन्होंने इसको गंभीरता से लेते हुए इस पर शीघ्र पहल करने का आश्वासन दिया।

ओंकार यादव
जदयू राजनीतिक सलाहकार समिति सदस्य बिहार

द एजेंसी डायलॉग के राष्ट्रीय मंच पर चमके बिहार की नौनिहाल

लखनऊ में बांका, भागलपुर के छात्र नेताओं ने दिखाया बदलते बिहार का नया आत्मविश्वास

बांका भागलपुर की बच्चियों को मिल प्रशस्ति पत्र

प्रधानाध्यापक तुलसी दास के साथ बच्चों

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

कहते हैं की अगर हौसले बुलंद हो तो बदलाव की राह को रौशन करना मुश्किल नहीं होता ।इस कथन को चरितार्थ किया है ,बांका ,भागलपुर के सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं ने जहां 12 दिसंबर 2025 को लखनऊ में आशीर्वाद फाउंडेशन के बैनर तले आर्थिक उद्यमिता सामाजिक समानता शैक्षणिक कार्यक्रम के आयोजन में बांका के प्रोन्नत मध्य विद्यालय कठौन की छात्रा नेहा कुमारी और लक्ष्मी कुमारी के साथ -साथ भागलपुर की

छात्रा आरुषि भारती एवं शिखा कुमारी में इस राष्ट्रीय मंच से बिहार के सरकारी विद्यालयों में अनुशासन, स्वच्छता ,और पढ़ाई के माहौल को बेहतर बनाने में किस तरह अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही है ।समस्त अतिथियों कि ध्यान आकृष्ट कराया। इन छात्राओं ने जिस आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता के साथ अपनी शैक्षिक क्षमता को दशार्या उसे सभी अतिथियों ने खूब सराहना की।इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव पार्थ सारथी सेन शर्मा उपस्थित थे ।मौके पर उन्होंने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य जिम्मेदार नागरिक तैयार करना है। उन्होंने बिहार सहित अन्य राज्यों से आए बच्चों के पहल की सराहना की इस अवसर पर प्रोन्नत मध्य विद्यालय कठौन के प्रधानाध्यापक तुलसीदास ,इंवाल्व की स्टेट मैनेजर सोनी झा, शिक्षिका भारती झा ,सहित भारी संख्या में विभिन्न राज्यों से आए हुए छात्र-छात्रा उपस्थित थी।

लखनऊ के राष्ट्रीय कार्यक्रम में बांका भागलपुर की बच्चियों को प्रतिभा सम्मान

आनंद मार्ग यूनिवर्सल रिलीफ टीम के द्वारा किया गया कंबल का वितरण

आनंद मार्ग उच्च विद्यालय आनंदपुर जेठौर जमुना परिसर में कार्यक्रम का हुआ आयोजन

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका में आनंद मार्ग हाई स्कूल आनंदपुर जेठौर जमुना परिसर में आनंद मार्ग उच्च विद्यालय के प्राचार्य आचार्य विश्व स्वरूपानंद अवधूत की अध्यक्षता में आनंद मार्ग यूनिवर्सल रिलेटिव टीम के द्वारा सैकड़ो जरूरतमंद लोगों को रविवार 14 दिसंबर 2025 को कंबल का वितरण किया गया। इस मौके पर यूनिवर्सल टीम के तहत मेडिकल कैंप का भी आयोजन किया गया ।इस कैंप के माध्यम से जरूरतमंदों को डॉक्टर के द्वारा जांच के उपरांत दवा का भी वितरण किया गया। इसके साथ ही नारायणी सेवा समिति के द्वारा लाभार्थियों को भोजन भी कराया गया ।आनंद मार्ग हाई स्कूल के प्राचार्य विश्व स्वरूपानंद महाराज ने बताया कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी आनंद मार्ग सेवा संस्था के द्वारा जरूरतमंद लोगों के बीच कंबल का वितरण किया गया। इस अवसर पर आनंद मार्ग ट्रस्ट समिति के सदस्य जयंत कुमार सिंह ,शिक्षक प्रवीण कुमार सिंह सहित भारी संख्या में आनंद मार्ग संस्था के सदस्य गण उपस्थित थे

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 14 दिसंबर 2025 को आनंद मार्ग यूनिवर्सल रिलीफ टीम के सहयोग से आनंद मार्ग हाई स्कूल आनंदपुर जेठौर जमुना परिसर में सैकड़ो जरूरतमंद लोगों को कंबल का वितरण किया गया ।साथ ही मेडिकल कैंप के तहत डॉक्टर से जांच कर दवा वितरण के साथ -साथ नारायणी सेवा समिति के द्वारा भोजन भी कराया गया।

आचार्य विश्व स्वरूपानंद अवधूत, प्राचार्य, आनंद मार्ग उच्च विद्यालय, आनंदपुर -बांका

आनंद मार्ग हाई स्कूल में कम्बल का वितरण

बांका में होगा फिल्म सिटी का निर्माण निरीक्षण को पहुंची टीम

कटोरिया प्रखंड में प्रस्तावित फिल्म सिटी का निरीक्षण करने पहुंचे कला संस्कृति विभाग के सचिव प्रणव कुमार

कला एवं संस्कृति विभाग के सचिव प्रणव कुमार एवं बॉलीवुड कलाकारों के साथ जिलाधिकारी नवदीप शुक्ला

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

आज बाँका जिले के कटोरिया में प्रस्तावित फिल्म सिटी के स्थल का निरीक्षण कला एवं संस्कृति विभाग के सचिव श्री प्रणव कुमार एवं जिला पदाधिकारी, बांका श्री नवदीप शुक्ला द्वारा किया गया।

कला एवं संस्कृति विभाग के सचिव के साथ बॉलीवुड के प्रसिद्ध कलाकार सुश्री नीतू चंद्रा, श्री टुनटुन शर्मा, श्री गौरव द्विवेदी एवं श्री राहुल नेहरा भी फिल्म सिटी परियोजना के संभावित स्वरूप और संभावनाओं को समझने हेतु उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में अपर समाहर्ता, उप विकास आयुक्त, निदेशक जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, जिला कला एवं संस्कृति पदाधिकारी सहित सभी जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

नीतू चंद्रा के मोमेंटों देकर सम्मानित करते डीएम नवदीप शुक्ला

निरीक्षण के दौरान फिल्म सिटी के संभावित क्षेत्र, भौगोलिक स्थिति, पहुँच मार्ग, प्राकृतिक परिवेश तथा भविष्य की संरचनाओं की संभावनाओं का गहन अध्ययन किया गया। कलाकारों द्वारा भी अपनी राय साझा करते हुए क्षेत्र को फिल्म निर्माण के लिए अत्यंत उपयुक्त बताया गया।

इसके पश्चात सभी ने ओढ़नी डैम का दौरा किया और जिला प्रशासन द्वारा किए गए कार्यों की समीक्षा की। सचिव एवं कलाकारों ने ओढ़नी डैम की प्राकृतिक सुंदरता और शांत वातावरण की सराहना की। साथ ही सचिव द्वारा संबंधित अधिकारियों को कई आवश्यक दिशा-निर्देश भी प्रदान किए गए।

ओढ़नी डैम के मनोहर वातावरण का आनंद लेते हुए अतिथियों ने बोटिंग का भी लुत्फ उठाया।

बांका की धरती पर बॉलीवुड कलाकारों का स्वागत करते जिलाधिकारी नवदीप शुक्ला

गैरसरकारी संगठन मुक्ति निकेतन का संकल्प साल भर में बनाएंगे बाल विवाह मुक्त बांका जिला

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

जागरूकता रैली में शामिल सदस्यगण

पूरे देश से बाल विवाह को उखाड़ फेंकने के उद्देश्य से भारत सरकार की 100 दिन की विशेष कार्ययोजना से उत्साहित गैरसरकारी संगठन मुक्ति निकेतन ने कहा कि वह बांको` को साल भर के भीतर बाल विवाह मुक्त बनाने के लिए सरकारी एजेंसियों के साथ कंधे से कंधा मिला कर काम करेगा। 100 दिवसीय गहन जागरूकता अभियान जिसे बाल विवाह मुक्त भारत के एक वर्ष पूरे होने के मौके पर पूरे देश में शुरू किया गया है, ने एक लक्षित रणनीति तय की है। इसमें स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों, उन धार्मिक स्थलों जहां विवाह संपन्न कराए जाते हैं, विवाह में सेवाएं देने वाले पेशेवर सेवा प्रदाताओं, और आखिर में पंचायतों व नगरपालिका वार्डों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, ताकि बच्चों के खिलाफ इस सदियों पुराने अपराध का अंत सुनिश्चित किया जा सके। मुक्ति निकेतन देश में बाल अधिकारों के संरक्षण के लिए नागरिक समाज संगठनों के देश के सबसे बड़े नेटवर्क जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन का सहयोगी संगठन है। इसके 250 से भी अधिक सहयोगी संगठन देश के 451 जिलों में बाल विवाह के खात्मे के लिए जमीन पर काम कर रहे हैं। पिछले एक वर्ष में ही इस नेटवर्क ने देश में एक लाख से ज्यादा बाल विवाह रोके हैं। बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के 27 नवंबर को एक वर्ष पूरा होने के अवसर पर मुक्ति निकेतन ने स्कूलों, ग्रामीण समुदायों और अन्य संस्थानों में जागरूकता कार्यक्रम और पूरे जिले में जगह-जगह बाल विवाह के खिलाफ शपथ समारोह आयोजित किए। संगठन ने जनसमुदाय को बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम के प्रावधानों के बारे में भी जागरूक किया और उन्हें समझाया कि कानून के अनुसार बाल विवाह में किसी भी तरह से शामिल होने या सहायता करने वालों जिसमें शादी में आए मेहमान, कैटरर्स, टेंट वाले, बैंड वाले, सजावट वाले या बाल विवाह संपन्न कराने वाले पुरोहित, सभी को इस अपराध को बढ़ावा देने के जुर्म में सजा हो सकती है। पिछले कुछ वर्षों से कानून लागू करने वाली एजेंसियों व जिला प्रशासन के साथ करीबी समन्वय से काम करते हुए मुक्ति निकेतन ने पिछले एक वर्ष में ही 159 विवाह रुकवाए हैं।

बाल विवाह के खिलाफ जारी अभियान को और गति व मजबूती देने वाली सरकार की इस घोषणा का स्वागत करते हुए मुक्ति निकेतन के सचिव श्री चिरंजीव कुमार सिंह जी ने कहा, यह 100 दिवसीय गहन अभियान देश की दिशा बदलने वाला साबित होगा और हमें प्रधानमंत्री के विकसित भारत के लक्ष्य के करीब लाएगा। सदियों से हमारी बेटियों को अवसरों से वंचित किया गया है और विवाह के नाम पर उन्हें अत्याचार, शोषण और बलात्कार की ओर धकेला गया है। जन प्रतिनिधियों, सरकारी विभागों, कानून लागू करने वाली एजेंसियों और समुदायों का अभूतपूर्व तरीके से एक साथ आना, बाल विवाह के खात्मे के लिए भारत सरकार की प्रतिबद्धता और प्रयासों को नई ऊर्जा व रफ्तार देगा। इस

मुक्ति निकेतन कटोरिया

समन्वय और सामूहिक संकल्प से हम जिले को साल भर के भीतर बाल विवाह मुक्त बनाने के प्रति आश्वस्त हैं और अब इस अपराध को छिपने के लिए कहीं भी जगह नहीं मिलेगी।

सौ दिन के इस गहन जागरूकता अभियान को तीन चरणों में बांटा गया है और इसका आखिरी चरण 8 मार्च 2026 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर समाप्त होगा। इसका पहला चरण 31 दिसंबर तक चलेगा जिसमें स्कूलों, कालेजों और अन्य शिक्षण संस्थानों में जागरूकता के प्रसार पर जोर रहेगा। एक जनवरी से 31 जनवरी के बीच दूसरे चरण में मंदिर, मस्जिद, चर्च और गुरुद्वारे जैसे धार्मिक स्थलों पर जहां विवाह संपन्न कराए जाते हैं, बैंक्वेट हाल, और बैंड वालों जैसे विवाह में सेवाएं देने वालों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। तीसरा और आखिरी चरण 8 मार्च तक चलेगा। इसमें बाल विवाह की रोकथाम के लिए ग्राम पंचायतों, नगरपालिका के वार्डों और समुदाय स्तरीय भागीदारी पर प्रमुखता से ध्यान दिया जाएगा।

चर्चित बिहार पत्रिका परिवार की ओर से स्वर्गीय श्याम सुंदर अग्रवाल को विनम्र श्रद्धांजलि

बांका शहर के प्रसिद्ध कपड़ा व्यवसायी 91 वर्षीय श्याम सुंदर अग्रवाल, जो भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य अनुपम गर्ग के पिता थे. शुक्रवार , दिनांक 9.1.2025 की शाम को उनका निधन हो गया. उन्होंने करहरिया स्थित अपने आवास पर अंतिम सांस ली। इनका अंतिम संस्कार शनिवार को भागलपुर के बरारी गंगा घाट पर किया गया. श्याम सुंदर अग्रवाल लंबे समय से कपड़ा व्यवसाय के साथ साथ संघ से जुड़े थे. जिससे शहर में उनकी अलग पहचान बनी थी. उनके निधन पर पूर्व मंत्री सह भाजपा विधायक रामनारायण मंडल, अमरपुर के जदयू विधायक जयंत राज, बेलहर के जदयू विधायक मनोज यादव, भाजपा के भाजपा जिला अध्यक्ष बृजेश मिश्रा, एवं विकास चौरसिया सहित अन्य ने शोक संवेदना प्रकट किया चर्चित बिहार परिवार की ओर से शत-शत नमन एवं विनम्र श्रद्धांजलि।

श्री साई आदर्श नेत्रालय के द्वारा रौशन हो रहा है जरुरतमंदों की जिन्दगियां

श्री साई अमर हीरा मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट की इकाई है श्री साई आदर्श नेत्रालय

श्री साई आदर्श नेत्रालय में मोतियाबिंद के ऑपरेशन के बाद लाभुक

राजेश पंजिकार (ब्यूरोचीफ)

बांका शहर मे कई वर्षो से संचालित श्री साई अमर हीरा मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट की एक इकाई श्री साई आदर्श नेत्रालय के द्वारा एक अनोखी पहल की जा रही है। इस नेत्रालय के माध्यम से जिले के विभिन्न प्रखंडों में शिविर लगाकर जरूरतमंदों के आंखों की जांच योग्य चिकित्सकों के द्वारा कराया जा रहा है. तथा जरूरतमंदों के मोतियाबिंद का ऑपरेशन योग्य चिकित्सकों के द्वारा साई आदर्श नेत्रालय जो कटोरिया रोड बांका में अवस्थित है, में निःशुल्क ऑपरेशन कराया जा रहा है. संस्था के प्रबंध

आंखों की जांच करते डॉक्टर

निदेशक धर्मेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि प्रभु महादेव की प्रेरणा से मुझे जन सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ है। जिसमें नियमित रूप से श्री साई आदर्श नेत्रालय के द्वारा योग्य चिकित्सकों के द्वारा मरीजों के मोतियाबिंद का सफल ऑपरेशन कराया जा रहा है। इस क्रम में मरीजों के ऑपरेशन के साथ-साथ दवाई, चश्मा, भोजन एवं रहने की सुविधा निःशुल्क रुप में प्रदान की जा रही है। श्री साई आदर्श नेत्रालय के द्वारा बांका में पिछले कई वर्षों से जिला स्वास्थ्य समिति एवं वीजन फाउंडेशन ऑफ इंडिया मुंबई की संस्था के सौजन्य से निःसहाय एवं जरूरत मंद लगभग 10 हजार से अधिक मोतियाबिंद के मरीजों का निःशुल्क ऑपरेशन एवं लैंस प्रत्यारोपण किया गया है। लिहाजा श्री साई आदर्श नेत्रालय के प्रबंध निदेशक धर्मेंद्र कुमार सिंह ने जिला स्वास्थ्य समिति बांका एवं वीजन फाउंडेशन ऑफ इंडिया मुंबई को श्री साई आदर्श नेत्रालय बांका को सहयोग प्रदान करने हेतु कोटि-कोटि आभार प्रकट करते है।

प्रभु महादेव की प्रेरणा से मुझे जनसेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ है। साई आदर्श नेत्रालय के द्वारा जरूरतमंद लोगों का कई वर्षों से लगातार योग्य एवं अनुभवी चिकित्सकों के द्वारा मोतियाबिंद मरीजों का सफल ऑपरेशन की सुविधा निःशुल्क प्रदान की जा रही है।

धर्मेंद्र कुमार सिंह
प्रबंध निर्देशक
श्री साई आदर्श नेत्रालय
कटोरिया रोड, बांका

शिविर में रोगियों का आंखों की जांच करते डॉक्टर

समस्त जिलेवासियों को नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
साई अल्ट्रासाउण्ड सेंटर
साई अल्ट्रासाउण्ड सेंटर
Mob. 9204021816
बांका
Mob. 9204021816
प्रो. अश्वनी कुमार
पी.बी.एस.
कॉलेज के समीप
कटोरिया रोड, बांका
मो.-9204021816

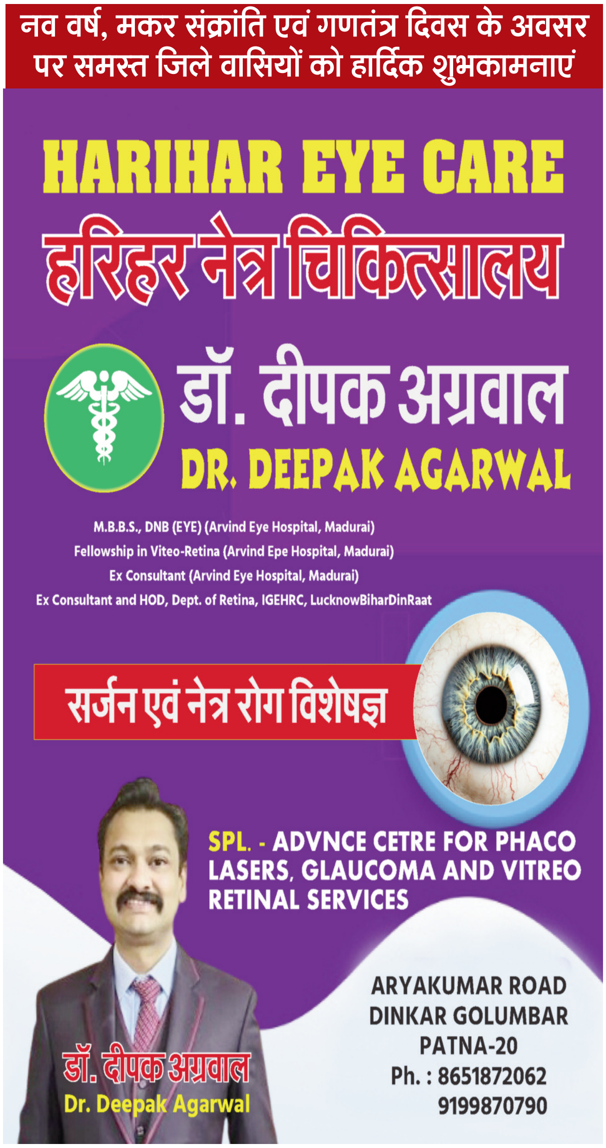

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
HARIHAR EYE CARE
हरिहर नेत्र चिकित्सालय
डॉ. दीपक अग्रवाल
DR. DEEPAK AGARWAL
M.B.B.S., DNB (EYE) (Arvind Eye Hospital, Madurai)
Fellowship in Viteo-Retina (Arvind Epe Hospital, Madurai)
Ex Consultant (Arvind Eye Hospital, Madurai)
Ex Consultant and HOD, Dept. of Retina, IGEHRC, LucknowBiharDinRaat
सर्जन एवं नेत्र रोग विशेषज्ञ
SPL. - ADVNCE CETRE FOR PHACO LASERS, GLAUCOMA AND VITREO RETINAL SERVICES
डॉ. दीपक अग्रवाल
Dr. Deepak Agarwal
ARYAKUMAR ROAD
DINKAR GOLUMBAR
PATNA-20
Ph. : 8651872062
9199870790

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
श्रेयांश ट्रेडर्स
प्रोपराइटर-शशि चौधरी
डी.एम कोठी चौक
बाबू टोला बांका
मो.: 7738243024

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
मंजूर आलम
प्रो.राज स्टोर
इलेक्ट्रॉनिक
मो. : 9931648300

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
दीपक चौधरी
प्रोपराइटर
कल्याणी डिजिटल
डोर मैन्युफैक्चरिंग
बाराहाट बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
सत्यप्रकाश
प्रो. प्रकाश
रेडिमेड स्टोर
भागलपुर रोड
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
गोविन्द
राजगढ़िया
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
पंकज कु. जय
प्रो.जयप्रकाश
मेडिकल हॉल
पुनसिया
जिला - बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
हर गाँव, हर द्वार
भाजपा फिर एक बार
अनुपम गर्ग
जिला संयोजक
वाणिज्य प्रकोष्ठ, भाजपा बाँका
अनुपम गर्ग
AnupamGargBJP
जिला संयोजक वाणिज्य प्रकोष्ठ भाजपा बाँका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर
समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
चिरंजीव कुमार
सचिव, मुक्ति निकेतन, कटोरिया (बांका)

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
भीष्म नारायण
डायरेक्टर
आइडियल होली मिशन आवासीय विद्यालय
कटोरिया, बांका, मो. 9661264318
HOLY MISSION
RESIDENTIAL SCHOOL
MEDIUM

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

मनोरमा देवी नर्सिंग एंड एलाइड इंस्टिट्यूट
कटोरिया

रवि कुमार सिंह

सचिव

श्रीमति मनोरमा देवी नर्सिंग एंड एलाइड इंस्टिट्यूट
कटोरिया, जिला-बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

धर्मेंद्र कुमार सिंह

जनरल सेक्रेटरी

श्री साई अमर हीरा मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट, सह- प्रबंध निदेशक, श्री साई आदर्श नेत्रालय, कटोरिया रोड - बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

मृत्युंजय कुमार

संस्थापक सह निदेशक

शिव ज्योति इंटरनेशनल स्कूल

पता -नेहरू कॉलोनी, रेलवे ओवर ब्रिज के समीप बाबू टोला, बांका-813102

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

प्रो.अमित कुमार

शिव ऑटोमोबाइल्स

टीवीएस शोरूम
बांका रोड़ कटोरिया

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. सरयू प्रसाद यादव

अध्यक्ष कुसाहा वन समिति
जिला- बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ मौलेश्वरी सिंह विद्याभूषण

M.H.M.B.B.S. (Darbhanga) R.M.P.H. (Patna), D.C.P. (Ranchi) Regd. No. 16261 दुधारी बांका, मो. 9955601568

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ बलराम मंडल

दुधारी
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

आचार्य रघुनंदन शास्त्री

आवासीय मार्शल एकेडमी, खेसर, बांका, मो.:8002850364

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

राजीव कु. यादव

संचालक
ग्राहक सेवा केंद्र
बैंक ऑफ इंडिया
कटोरिया
जिला-बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

बरुण कुमार सिंह

प्रधानाध्यापक
N P S झिकटा (यादव टोला) रजौन, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

मनोज कु. मंडल

दुग्ध व्यवसायी
ग्राम -कल्याणपुर
पोस्ट- दुधारी, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अमरेन्द्र कुमार साह

प्रो.मंदार प्रिंटिंग प्रेस
तेलिया
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

उत्तम कुमार

बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

जयंत कुमार सिन्हा

सामाजिक कार्यकर्ता
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ डी.के सिंह

हेल्थ फैसिलिटेटर
ग्रामीण सेवा सदन
धोरैया चौक, बौंसी रोड पंचवारा जिला - बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

तुलसी दास

प्रधानाध्यापक
प्रोन्नत मध्य विद्यालय
कठौन- कटोरिया -जिला -बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

आचार्य विश्व स्वरूपानंद अवधूत

प्राचार्य, आनंद मार्ग हाई स्कूल
आनंदपुर, बांका,
मो.-9932895365

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

प्रवीण कु. सिंह

लब्ध प्रतिष्ठित उद्घोषक सह प्रधान शिक्षक
मो.: 9973869914

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

प्रदीप कुमार गुप्ता

पूर्व मुखिया

कटोरिया, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक

प्रो. (डॉ) हरिकिशोर भारद्वाज

(व्यवस्थापक सह निदेशक)

युग निर्माण मिशन गायत्री विद्यापीठ, नोनिहार, वार्ड - 6, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

रंजीत कुमार

प्रोपराइटर

कुमार बीज भंडार अलीगंज, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

रंजित कु.शर्मा

प्रोपराइटर

शक्ति ग्लास हाउस एंड हार्डवेयर, कचहरी रोड बांका, मो.:-8084789834

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

हेमंत कुमार

जिला निबंधन पदाधिकारी, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

त्रिपुरारी शर्मा

जिला कृषि पदाधिकारी सह परियोजना निदेशक, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

बलवंत कुमार

जिला खनिज पदाधिकारी बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

सूर्य भूषण कुमार

जिला माप तौल पदाधिकारी, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

श्री सुमित्रानंदन

कार्यपालक पदाधिकारी नगर परिषद बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

मनोरंजन प्रसाद

जिला कार्यक्रम पदाधिकारी मनरेगा, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

जितेन्द्र कुमार

M.V.I बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. संजय कुमार सिंह

B.A.M.S (Patna)
शास्त्री चौक
विश्वकर्मा मंदिर के सामने
बांका-9534603144

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अनुराग कुमार

कार्यपालक पदाधिकारी
नगर पंचायत -कटोरिया
सह अमरपुर, जिला -बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

राजेश कुमार

कार्यक्रम पदाधिकारी मनरेगा अमरपुर जिला बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

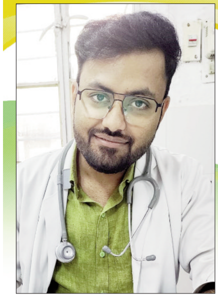

डॉ. कुमार रमन

B.D.S (T.M.U)
Moradabad U.P
न्यू रौनक मेडिकल हॉल डैम रोड,
बौंसी–बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

जय चौहान

प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

दीपक कुमार

मत्स्य प्रसार पदाधिकारी बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

राजीव नन्दन

प्रधान लिपिक
सिविल सर्जन कार्यालय
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

राज किशोर प्रसाद

अनुमंडल अग्निशमन पदाधिकारी बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
कंचन कुमारी
जिलाध्यक्ष, राजद महिला प्रकोष्ठ
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
इण्डेन है जहां खुशहाली है वहां
प्रतिज्ञा इंडियन गैस एजेंसी, बांका
विंटर ऑफर
₹ 888/- के डाउन पेमेंट पर
एक भरा हुआ गैस सिलेंडर एवं रेगुलेटर के साथ गैस कनेक्शन ले जाएं
ऑफर : 01 दिसंबर 2024 से 31 दिसंबर 2024
ऑनलाइन बुकिंग करने बाद जिले में किसी भी स्थान पर मात्र 3 घंटे में होम डिलीवरी की सुविधा
PRATIGYA INDANE GAS AGENCY
Indane
प्रतिज्ञा इंडियन गैस एजेंसी, बांका
9955334447, 9431868218
Office Time : Tue to Sun 9:00 AM to 5:00 PM

Prop : Pratigya Kumari
SAIDDHANTIK TRADERS
FIRE ALL SOLUTION
INSTALLATION, REFILLING & SERVICING
Venue : Holy Family Road,
Near Glocal Hospital Bhagalpur
Call us Now :-
+91 9973766067, +91 9431868218

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
HP GAS
WELCOME
स्वागतम
रामचन्द्र
गैस
एजेंसी
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक
प्रो. :- कृष्णा कुमार
मो. :- 7004065499, 6204525321
अम्बिका टेन्ट हाउस
पता : जिला परिषद् मार्केट, भेरायटी शू के बगल में, बाँका
हमारे यहाँ कुर्सी, टेबुल, समियाना, गेट झालर,
पंडाल, एवं वरमाला कुर्सी के लिए सम्पर्क करें।
अजय मंडल
नोट : रसोईयाँ, वेटर, लेडिज वेटर एवं जोकर दरबान की सुविधा उपलब्ध है।

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
शीतल चौधरी
प्रोपराइटर
शीतल फैन इंडस्ट्रीज, बांका
मो. : 7870802006

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
जय माता दी
7870802006, 9431801435
जय माता दी
Fire Proof Base
सुजीत ट्रेडर्स
SINCE 1968
CONA smyle
Vishwas Wahi, Soch Nayi

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. प्रभा रानी

प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, सरैयाहाट, दुमका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. विनीता प्रसाद

उपाध्यक्ष, नगर परिषद, बांका

कुमार सेनापति

सामाजिक कार्यकर्ता, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

राहुल कुमार डोकानियां

समाज सेवी

बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

मनीष कु. उर्फ मोनू

जिला उपाध्यक्ष

भाजपा युवा मोर्चा, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

राजीव कुमार झा

अध्यक्ष,

युवा शक्ति पुस्तकालय, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

राजेश कुमार पाठक

प्रोपराइटर
समग्र मेडिकल
गोड्डा रोड पंजवारा
जिला- बांका
मो-9430173847

मिट्टू कुमार

बिक्री प्रतिनिधि
पतंजलि स्टोर पंजवारा
जिला-बांका
मो.-6202172324

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

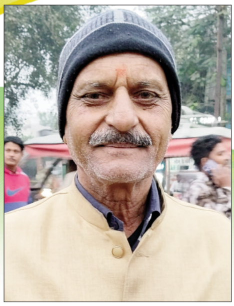

शंकर प्रसाद चौधरी

वरिष्ठ भाजपा नेता
बाराहाट, जिला - बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

विकास चौरसिया

वार्ड पार्षद, नगर परिषद सह नव निर्वाचित भाजपा नगर अध्यक्ष बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

पंकज कुमार दास

वार्ड पार्षद, वार्ड नंबर - 10
नगर परिषद, बांका, मो. : 9934757956

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

आजाद यादव

जिला उपाध्यक्ष
भारतीय जनता पार्टी
युवा मोर्चा- बांका, मो.-9534805950

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
सुमन अल्ट्रा स्कैन
सुमन अल्ट्रा स्कैन
डा. शैलेन्द्र कुमार
MBBS, MOC, SPL.Train [USG], JLNMCH[BGP]
चिकित्सा पदाधिकारी सदर अस्पताल बांका
सुमन डिजिटल एक्सरे सेन्टर
ECG की सुविधा उपलब्ध है।
डॉ. शैलेन्द्र कुमार
M.B.B.S., M.O.C., SPL. Train, (J.L.N.M.C.H.) BGP
चिकित्सा पदाधिकारी
सदर अस्पताल, बांका

समस्त जिलेवासियों को नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
देविका अल्ट्रासाउण्ड सेन्टर
आपके क्षेत्र का एकमात्र रंगीन अल्ट्रासाउण्ड सेन्टर
Whole Abdomen
Foetal Well Being
Upper Abdomen
Lower Abdomen
K.U.B.
Breast + Scrotum
लिंग जांच करना एवं करवाना दंडनीय अपराध है। यहां लिंग जांच नहीं होता है।
मो. : 9122710384
जगतपुर, राम जानकी मंदिर के सामने, बांका
सदर हॉस्पीटल के बगल में

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा को शाल देकर सम्मानित करते जदयू जिला सचिव मोती दास
मोती दास
जिला सचिव
जदयू-बांका
मो.-9939723235

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिले वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
शिव अल्ट्रासाउंड सेन्टर
केनरा बैंक के बगल में, कटोरिया रोड (बांका)
DR. A. PRAKESH
M.D RADIOLOGIST
Mob. : 9631889371, 9430606273
Dr. ABDUL ALI
M.D RADIOLOGIST
Mob. : 9631889371, 9430606273
विनोद कुमार
प्रोपराइटर : शिव अल्ट्रासाउंड सेंटर, पंजाब नेशनल बैंक के समीप कटोरिया रोड, बांका,
मो: 9631889371